बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

जून, 1987

रु. 2.50

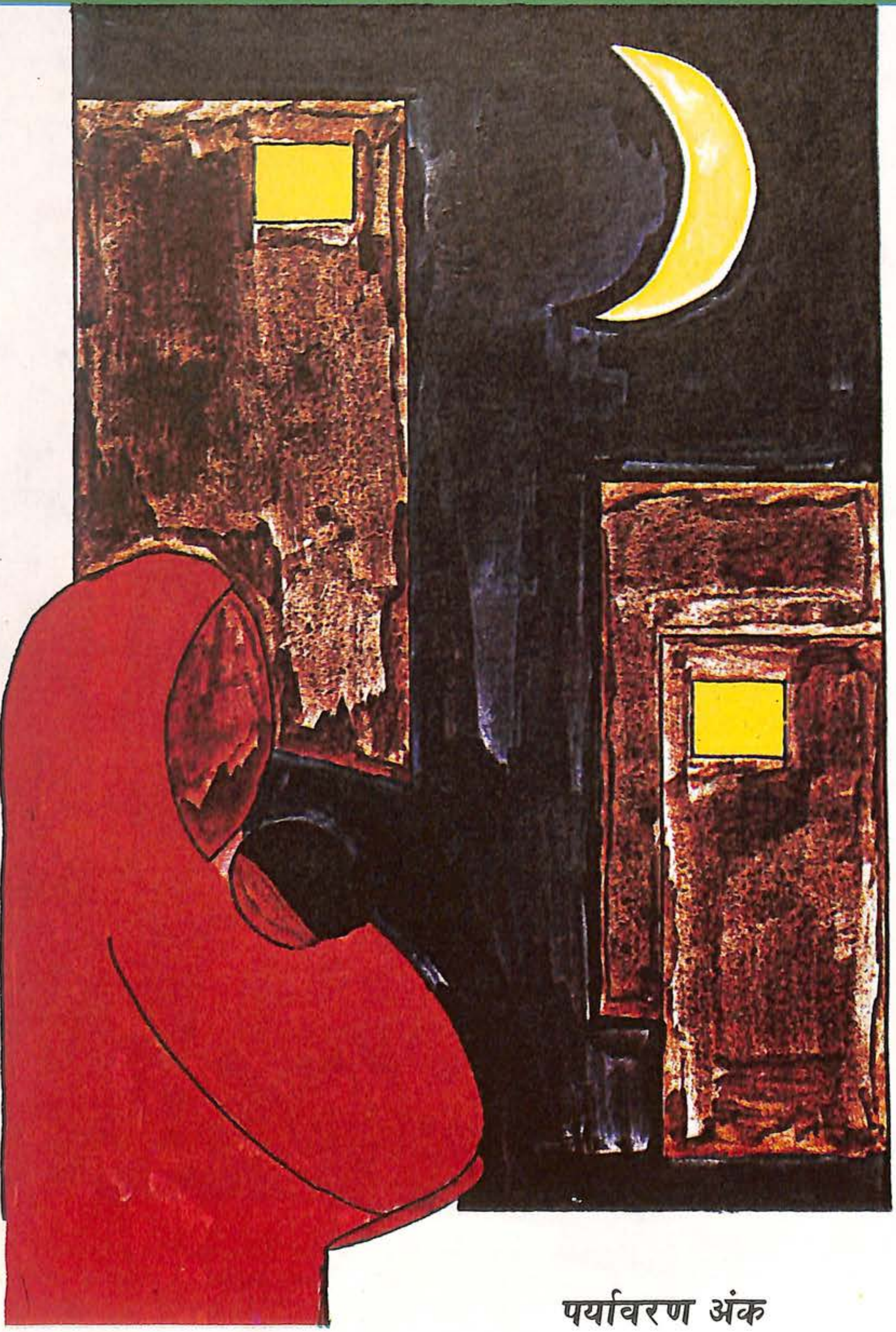

पर्यावरण अंक

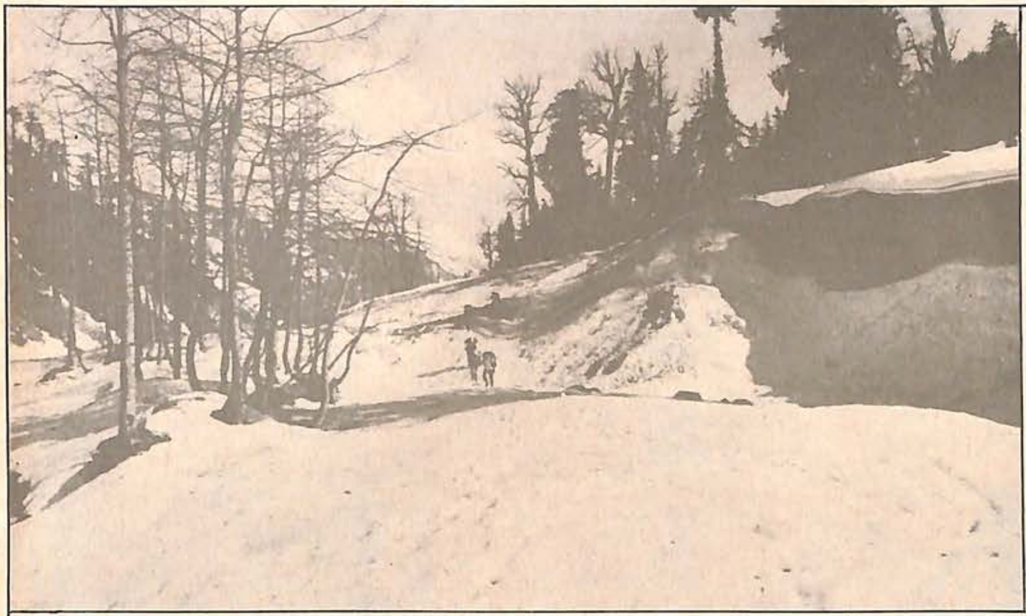

छायाः विनोद रायना

जंगल

बादलों का प्यार जंगल
आदमी का यार जंगल
फूल-फल देता सभी कुछ
कर रहा उपकार जंगल
मूक है, सहता इसी से
दुश्मनों के वार जंगल
जब कभी टेसू खिले तो
दहकता अंगार जंगल
कारखानों के धुएं से
पड़ गया बीमार जंगल
इस तरह कटता रहा तो
जाएगा बन थार जंगल
आदमी की पाशविकता
भोगने तैयार जंगल।

□ लक्ष्मीनारायण पयोधि

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
भाग 2 अंक 12 जून, 1987
संपादकः
विनोद रायना
संपादक मंडलः
राजेश उत्साही, निशा व्यास
हरगोविंद राय, गोपाल राठी
कलाः
जया विवेक
उत्पादन/वितरणः
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह
संपादकीय परामर्शः
रेक्स

चकमक का चंदा
छमाहीः 15 रुपए
वार्षिकः 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता-
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल 462016 (म.प्र.)

इस अंक में

2 कविताः कैसा विकास ?
3 बिगड़ता पर्यावरण
12 मेरा पन्ना
14 गिरगिटिया गुब्बारा
15 दो कहानियां
23 किसकी आयु कितनी?
24 अपनी प्रयोगशाला
26 माथा पच्ची
28 कविताः गिलहरी...
29 आश्चर्य लोक में एलिस
40 प्रतियोगिता

आवरण व अन्य सभी रंगीन चित्र तंजम नरसिम्हन ने बनाए हैं।

(इन चित्रों पर आधारित प्रतियोगिता का विवरण पृष्ठ 40 पर पढ़ो।)

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

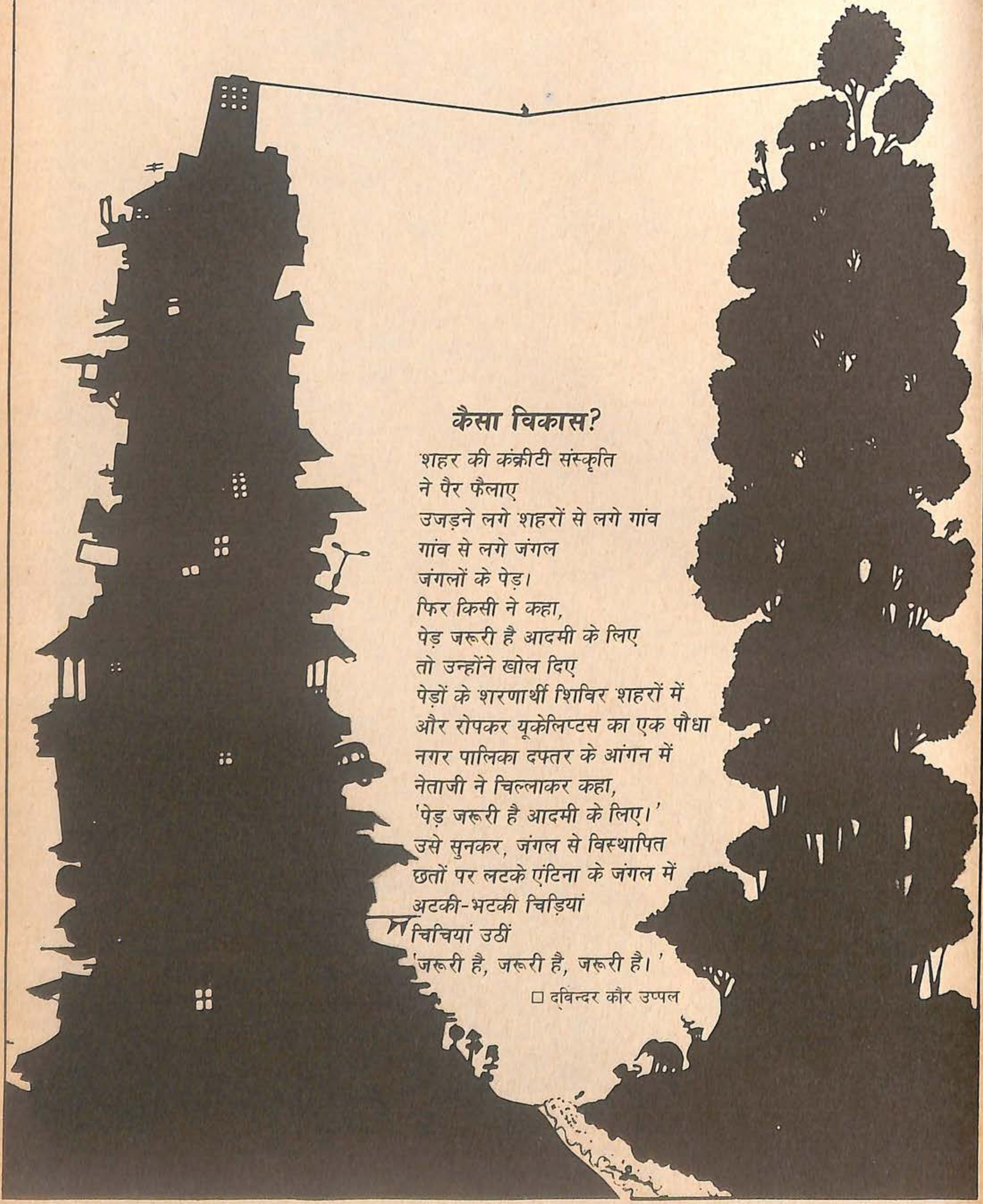

कैसा विकास?

शहर की कंक्रीटी संस्कृति
ने पैर फैलाए
उजड़ने लगे शहरों से लगे गांव
गांव से लगे जंगल
जंगलों के पेड़।
फिर किसी ने कहा,
पेड़ जरूरी है आदमी के लिए
तो उन्होंने खोल दिए
पेड़ों के शरणार्थी शिविर शहरों में
और रोपकर यूकेलिप्टस का एक पौधा
नगर पालिका दफ्तर के आंगन में
नेताजी ने चिल्लाकर कहा,
'पेड़ जरूरी है आदमी के लिए।'
उसे सुनकर, जंगल से विस्थापित
छतों पर लटके एंटिना के जंगल में
अटकी-भटकी चिड़ियां
चिचियां उठीं
'जरूरी है, जरूरी है, जरूरी है।'

□ दविन्दर कौर उप्पल

(चित्र देश का 'पर्यावरण' से साभार)

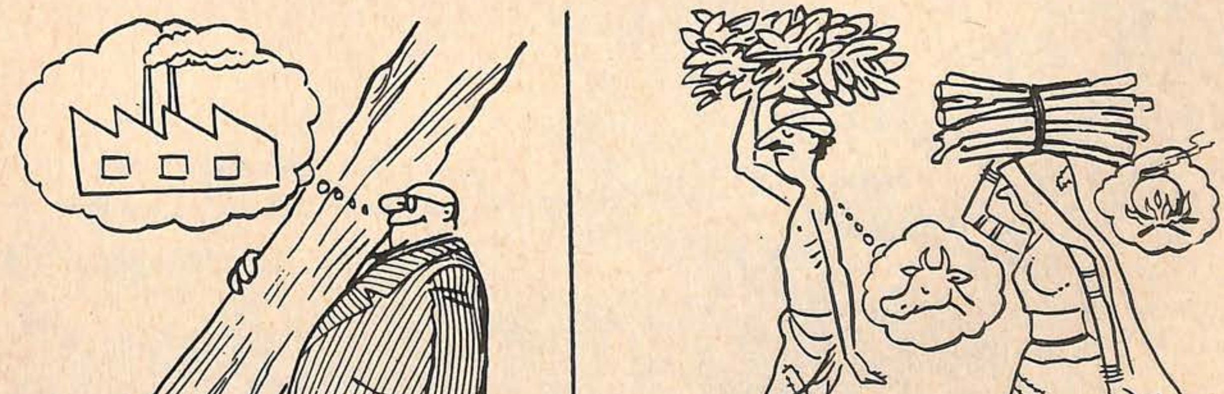

जंगल कौन नष्ट कर रहा है—मुनाफा बनाते उद्योगपति या गांववासी?

गांववासी तो जरूरत भर के लिए जंगल से सूखी लकड़ी बटोर लाते हैं।

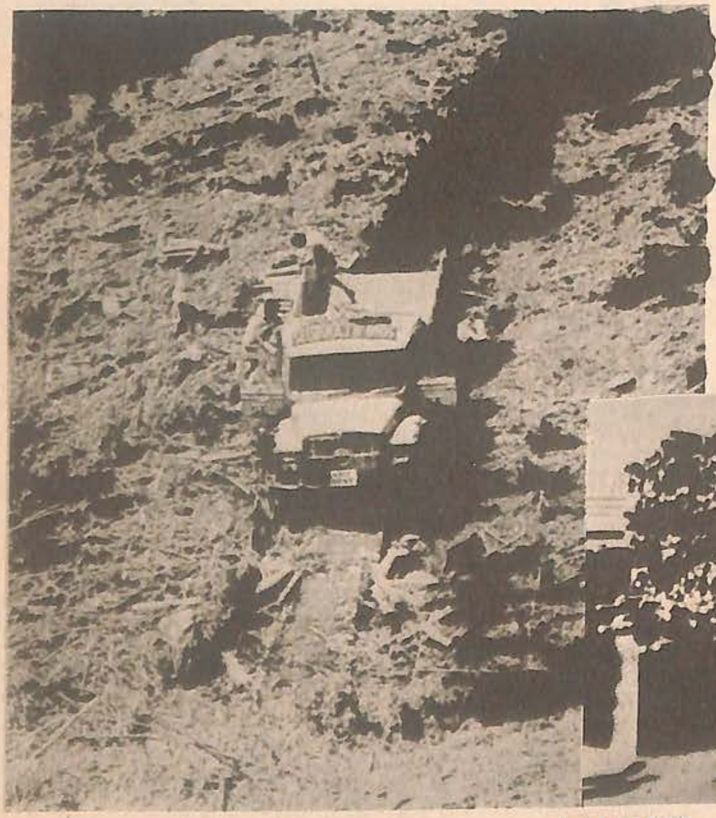

लेकिन ट्रकों में लदकर यह जंगल कहां जा रहा है: धुआं छोड़ती बड़ी-बड़ी कागज मिलों में!

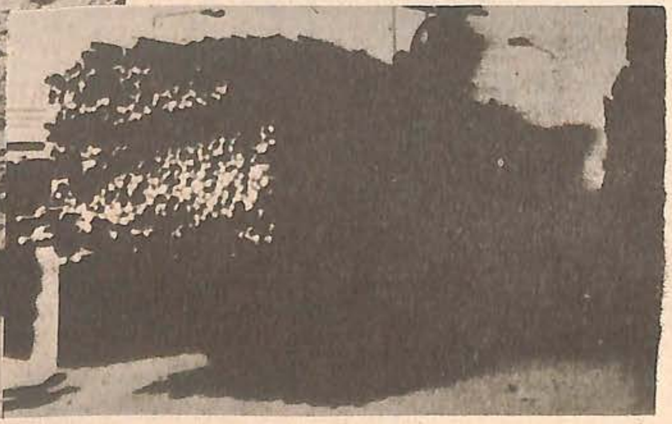

.... और शेष लकड़ी शहरों को सजाने और घरों में जलाने के लिए रेल्वे वैगनों में लदकर शहर पहुंचती है।

आम आदमी के लिए तो लकड़ी खरीद की पहुंच से भी दूर है यहां तक कि मृतकों को जलाने के बदले सीधे नदी में बहाना ज्यादा सस्ता और आसान है। केवल गंगा में ही हर वर्ष लगभग 10,000 लाशें बहाई जाती हैं।

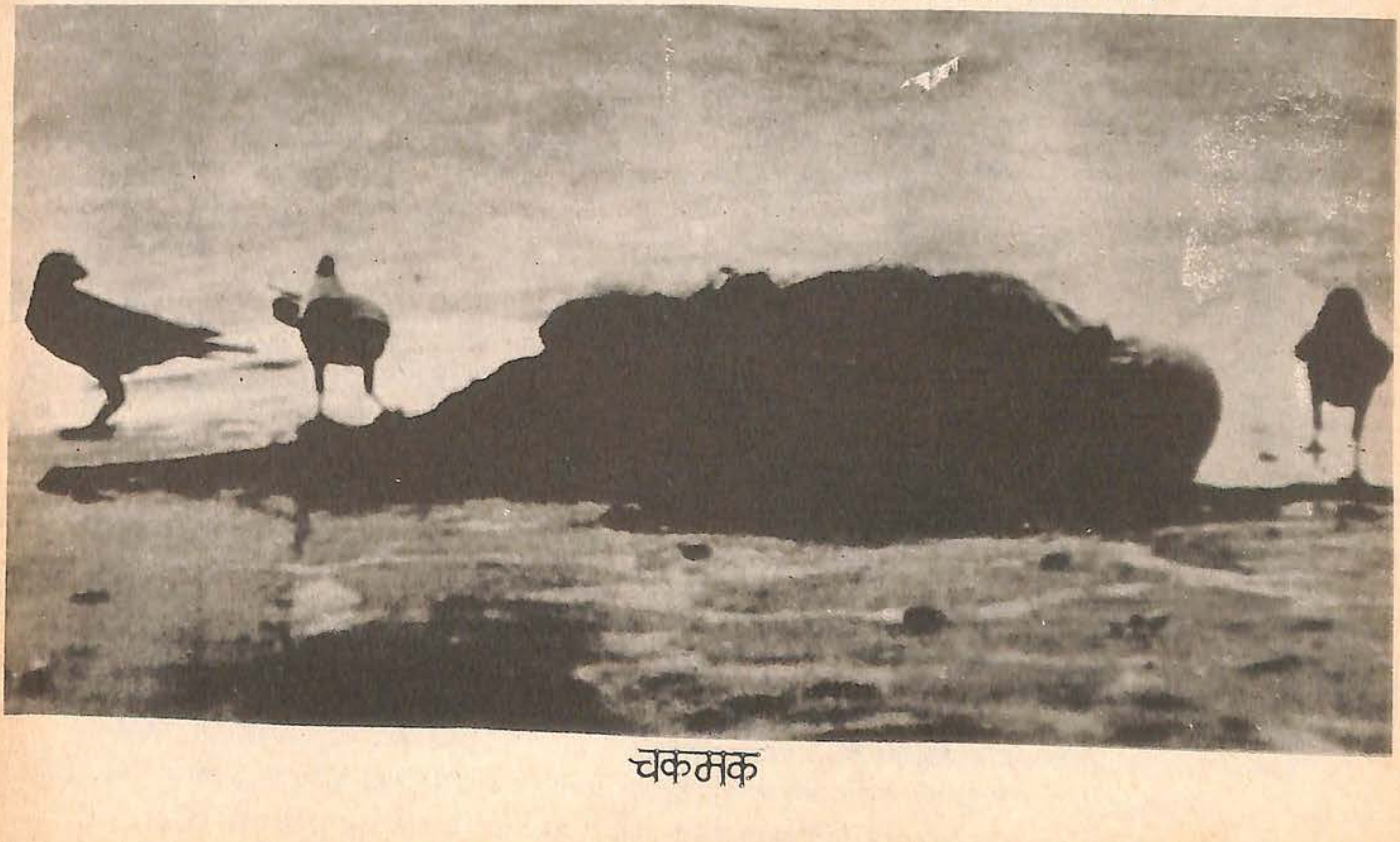

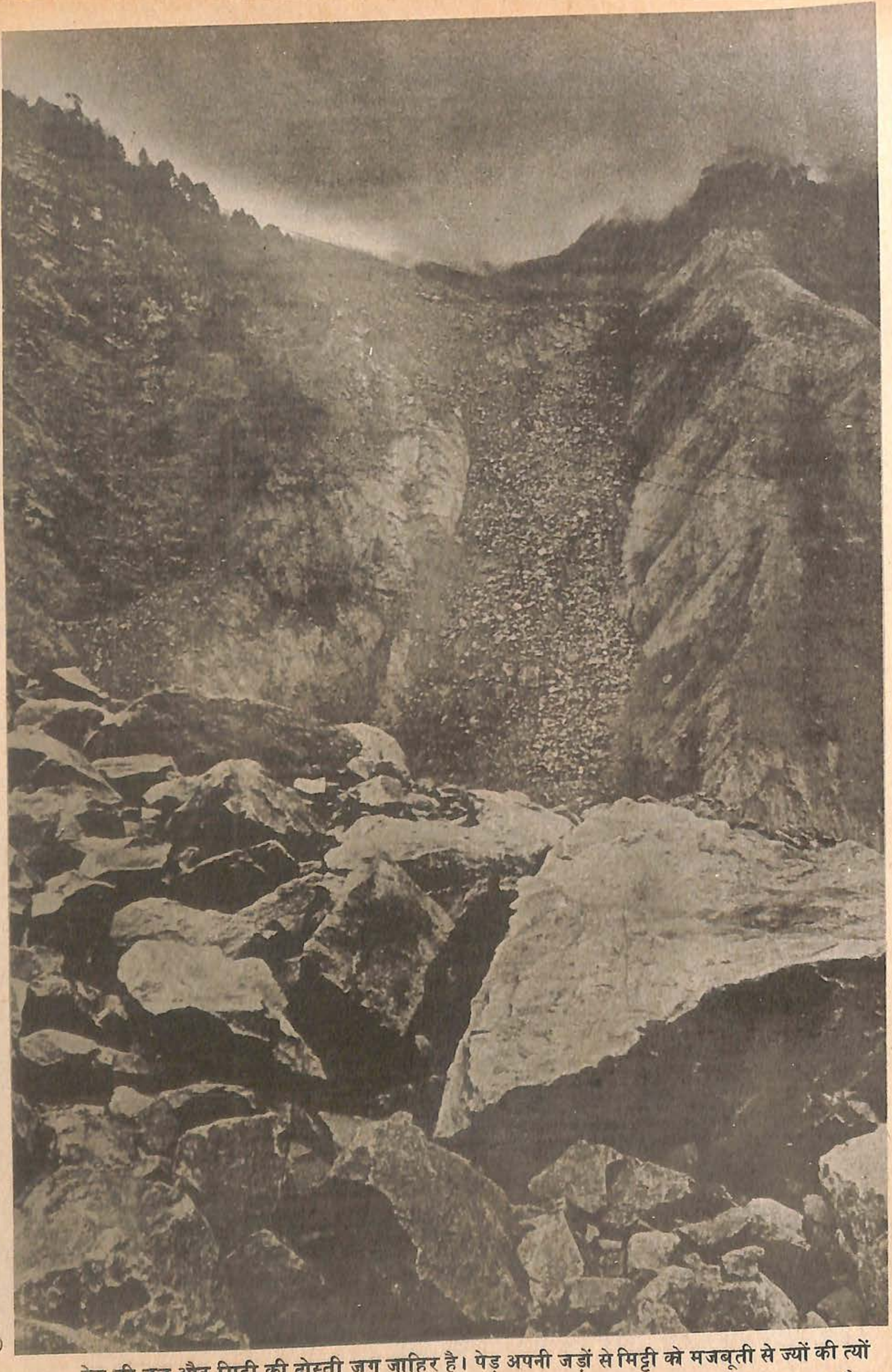

पेड़ की जड़ और मिट्टी की दोस्ती जग जाहिर है। पेड़ अपनी जड़ों से मिट्टी को मजबूती से ज्यों की त्यों बनाए रखते हैं, लेकिन जब पेड़ कटेंगे तो पहाड़ ढहेंगे। इसका असर पूरे देश के जन-जीवन पर पड़ता है।

पेड़ कटने से ज़मीन बंजर हो रही है और रेगिस्तान फैल रहे हैं।

जमीन को बंजर बनाने का श्रेय खदानों को भी जाता है। मलाजखंड में तांबे की इस खदान ने 2.5 वर्ग किलोमीटर जमीन को जिसमें धान की खेती होती थी, बंजर कर दिया है।

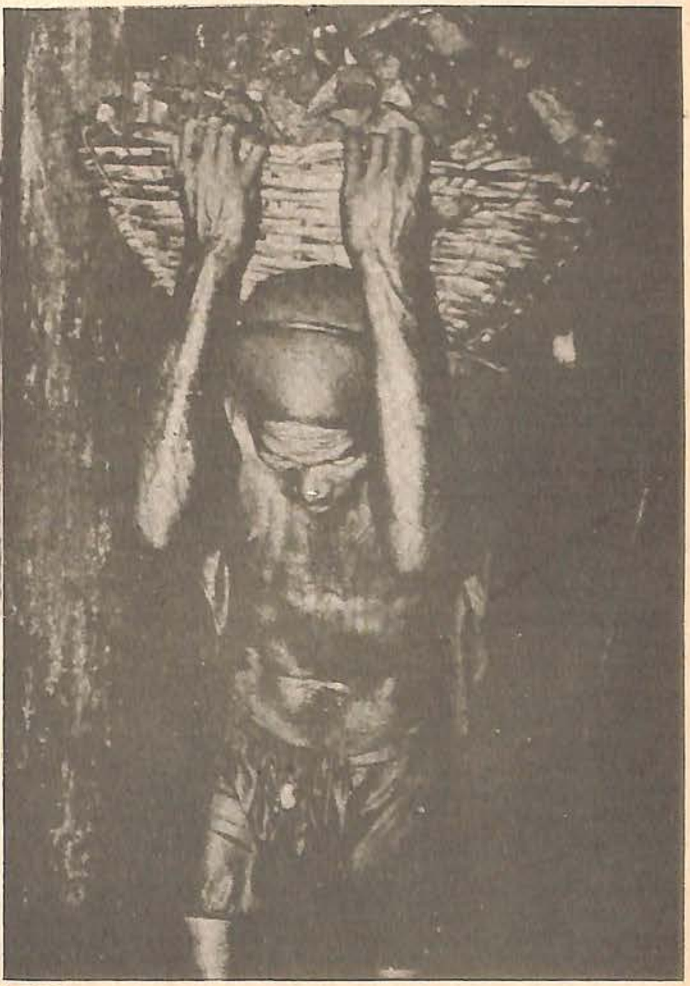

खदानों के प्रदूषित वातावरण में काम करना अपनी सेहत के साथ खिलवाड़ है। पर गरीब मज़दूर क्या करें? उन्हें इससे बचने के लिए आवश्यक पोशाक और उपकरण कोई नहीं देता।

देश के पर्यावरण की एक मुख्य समस्या है—पानी। पीने योग्य पानी के अभाव में या तो बीमारी से लदा पानी पिया जाता है या फिर महिलाएं अपने जीवन का बहुत सा समय पानी की तलाश में बिताती हैं।

सुभद्रा राठौर, आठवीं, मेघनगर, झाबुआ

देश के झीलें भी प्रदूषण से बची नहीं हैं। इस बात का एक प्रमाण है इन झीलों में मरी हुई मछलियां।

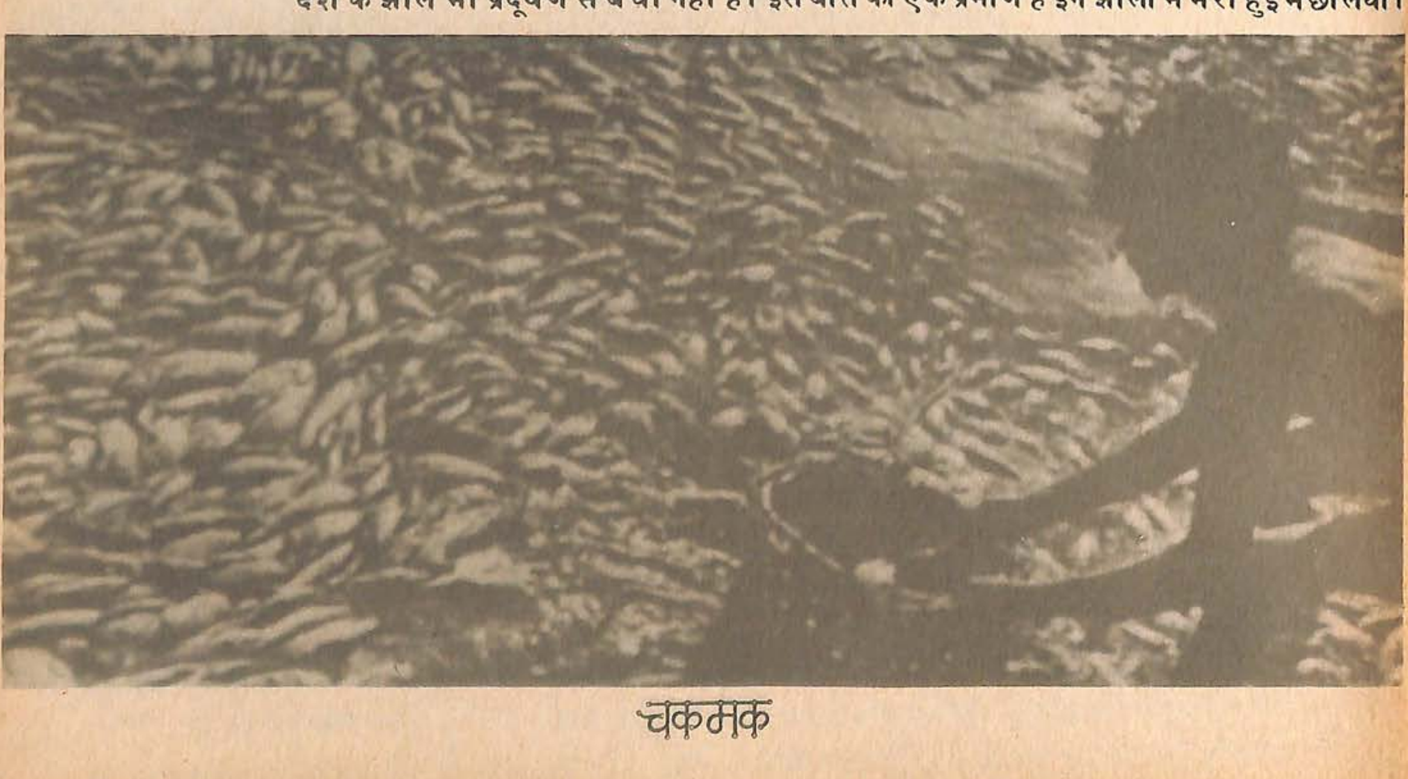

अगर ज़मीन और पानी का यह हाल है तो हवा कैसे बच सकती है। बड़ी-बड़ी फैक्टरियां मालिकों के लिए मुनाफा कमाती हैं और आम आदमी के लिए उगलती हैं जहरीली गैसें और धुआं।

हवा के प्रदूषण का एक मुख्य कारण है खाना बनाने के लिए लकड़ी जलाने से उठने वाला धुआं। गरीबों के लिए ऊर्जा का दूसरा स्रोत कहां से आएगा?

हवा के प्रदूषण से लोगों पर क्या असर हो सकता है इसके लिए अब प्रमाण की आवश्यकता नहीं है—चकमक नगरी भोपाल की यूनियन कार्बाइड यह सबको करके दिखा चुकी है।

घर ...! शहर के निम्नवर्ग को झुग्गी तक नसीब नहीं हो पाती है। पानी के बड़े पाईप ही उनका घर बन जाते हैं—बीमारियां कैसे न फैलेंगी?

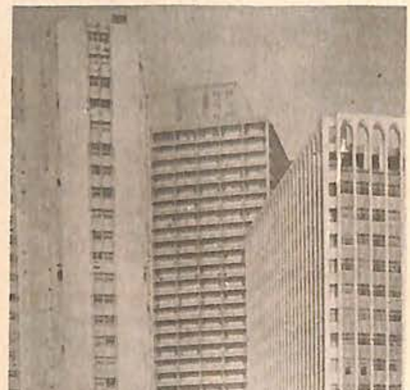

बड़ी-बड़ी इमारतें एक तरफ और दूसरी तरफ गरीबों के सर छुपाने के प्रयास—अज़ब है इस देश का समाजवाद!

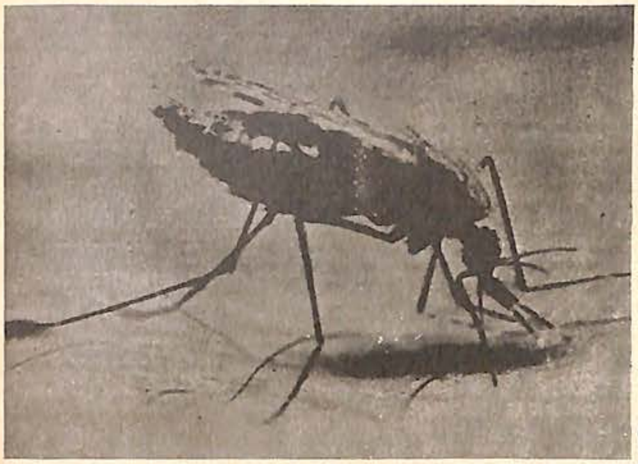

ऐसी परिस्थितियों में रहने का मतलब है प्रदूषण ही प्रदूषण और बीमारी पर बीमारी। मलेरिया, मच्छर को अपने अनुकूल पर्यावरण और कहां मिलेगा।

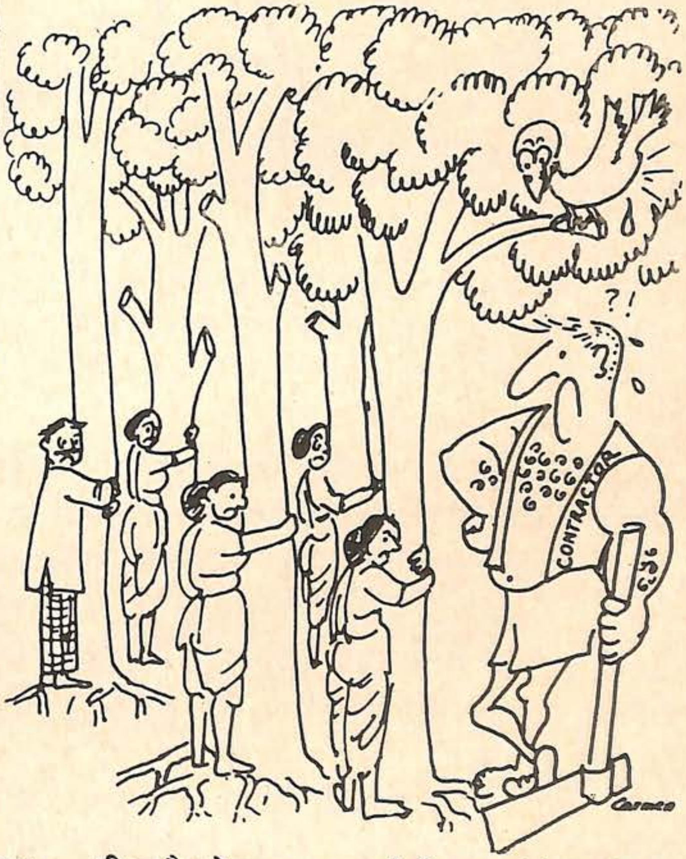

समीर बेहार, पांचवीं, बिलासपुर

मुनाफाखोरी, राजनैतिक दलाली, गलत विकास नीतियों से गरीबों पर बढ़ता अत्याचार। इन सबका मिला-जुला हाथ है देश के पर्यावरण को बिगाड़ने में। लेकिन आम आदमी हर जगह चुप नहीं है। उत्तर प्रदेश के जंगलों को नष्ट होने से बचाने के लिए गांववासियों ने एक आंदोलन छेड़ा है, जो चिपको आंदोलन के नाम से प्रसिद्ध है। ऐसा कहा जाता है कि इस आंदोलन के शुरू में कभी ऐसी घटना भी घटी कि लोग पेड़ों को कुल्हाड़ी से बचाने के लिए उन पर चिपक गए। कन्नड़ भाषा में चिपको को 'अप्पीको' कहा जाता है। यह केवल भाषा की बात नहीं है कर्नाटक में जंगल बचाने के लिए ऐसा ही एक आंदोलन चल रहा है।

बिगड़ते पर्यावरण की और भी समस्याएं हैं, जैसे बड़े बांध कृषि में दवाईयों व खाद का गलत उपयोग आदि आदि।

तुम्हारे आसपास (जहां तुम रहते हो) बिगड़ते पर्यावरण तथा प्रदूषण के कौन-कौन से मुख्य कारण हैं? इनसे निपटने के क्या प्रयास किए गए हैं, किए जा रहे हैं या करोगे? हमें लिख भेजो।

देश के बिगड़ते पर्यावरण की तरफ ध्यान खींचने और पर्यावरण के प्रति जनता को जागरूक करने के लिए कई गैर सरकारी संस्थाएं काम कर रही हैं। इनमें से एक है नई दिल्ली की संस्था—विज्ञान व पर्यावरण केंद्र (सेंटर फार साइंस एंड इनवायरमेंट)। इस केंद्र ने 1982 से 'देश का पर्यावरण' नाम से नागरिकों की एक रपट दो साल अलग-अलग छापी है। इस चित्र कहानी के चित्र इसी रपट से साभार प्रकाशित किए गए हैं।

चुहिया और चिड़िया

स्वाती स्याग, चार वर्ष, देवास

किसी जंगल में एक चुहिया और चिड़िया रहती थीं। उन दोनों में अच्छी मित्रता थी। एक बार चिड़िया और चुहिया गंगा जी नहाने चल दीं। चिड़िया ने चुहिया को अपनी पीठ पर बिठाया। अभी वह कुछ दूर ही पहुंची थी कि नीचे पके बेर लगे दिखे। उन दोनों ने सोचा कि चलो पहले बेर खा लें, फिर आगे बढ़ें।

दोनों बेर खाने के लिए नीचे उतरीं,लेकिन चुहिया जैसे ही बेर तोड़ती वैसे ही फंस जाती। चिड़िया ने मना किया कि तुम बैठ जाओ, मैं तुमको बेर तोड़कर दे दूंगी। लेकिन चुहिया ने कहा हम खुद तोड़ रहे हैं। चुहिया आखिर बेर तोड़ते-तोड़ते कांटें पर फंस गई। किसी तरह चिड़िया ने उसे कांटे से निकाला।

आगे की यात्रा फिर चालू हो गई। चुहिया ने देखा कि एक बैलगाड़ी में बढ़िया अनाज भरा है। सोचा थोड़ा आराम कर लूं, फिर आगे चलूं। चिड़िया और चुहिया बैलगाड़ी पर उतरकर अनाज खाने लगीं।

कुछ देर बाद चिड़िया, चुहिया को पीठ पर बिठाकर उड़ने को हुई तभी बैलगाड़ी एक गड्ढे में घुस गई। चिड़िया तो फुर्र से उड़ गई। लेकिन चुहिया चके में फंस गई। चिड़िया ने किसी तरह उसे बाहर निकाला और गंगा जी की ओर फिर से रवाना हो गईं।

कुछ दिन बीतने के बाद वे गंगाजी पहुंच गईं। वहां पहुंचकर चिड़िया बीच धार में गोता लगाकर निकल आई। चुहिया ने सोचा मैं भी दो चार गोते लगा लूं। चिड़िया ने मना किया, तुम पानी में डूब जाओगी। लेकिन चुहिया नहीं मानी और नदी में कूद पड़ी, जब डूबने लगी तो जोर से चिल्लाई। बड़ी मुश्किल से चिड़िया ने चुहिया को बाहर निकाला।

जब वे वापस घर की ओर रवाना हुईं तो चुहिया, चिड़िया से कहने लगी, कि तुमने मेरे लिए क्या किया। चिड़िया ने कहा, मैंने तुम्हें बेर के पेड़ से निकाला। चुहिया बोली वो तो मैं कान छिदा रही थी। चिड़िया बोली, मैंने तुम्हें बैलगाड़ी के पहिए से निकाला। चुहिया बोली, वो तो मैं कमर दबा रही थी। चिड़िया बोली, मैंने तुम्हें डूबते से बचाया। चुहिया बोली, वो तो मैं गोता लगाकर नहा रही थी। चिड़िया बोली ऐसे को कौन समझाए और फुर्र से उड़ गई।

□ राघवेन्द्र सिंह, आठवीं
चौरहटा, सतना

सांप से सामना

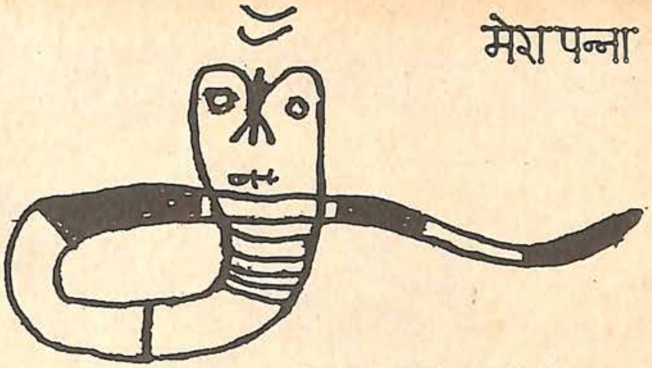

विद्या भूषण भूआर्य, चार वर्ष, कुरेनार बस्तर

दिसंबर महिने की शुरूआत थी। ठंड दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी। एक दिन मेरे पिताजी ने मुझे सुबह-सुबह खेत देख आने को कहा। ठंड से बचने के लिए मैंने एक गमछा हाथ में लिया और चल दिया खेत की ओर।

खेतों में चारों ओर धुंधलका छाया हुआ था। दूर के पेड़ और गांव दिखाई नहीं दे रहे थे। आसमान पर काले बादल छाए हुए थे, इसलिए कभी सूर्य दिखाई देता और कभी बादल की ओट में छिप जाता। खेतों में आधे से अधिक धान की कटाई हो चुकी थी। बची हुई धान भी पूरी तरह से पीली हो चुकी थी। मेड़ की हरी-हरी घास भी पीले रंग में परिवर्तित होने लगी थी। घास पर ओस की बूंदें सूर्य के मद्धिम प्रकाश में मोतियों-सी चमक रही थीं। इस प्राकृतिक सुंदरता का आनंद उठाता हुआ मैं अपने खेत तक पहुंच गया।

खेत में धान की कटाई हो चुकी थी। मैं मेड़ से उतरकर खेत में चलने लगा। खेत में यहां से वहां तक कटी हुई धान की कतारें थीं। इन कतारों पर भी ओस की बूंदें झिलमिला रही थीं। मैं अपने ध्यान में खोया धान की कतारों पर चला जा रहा था। अचानक कोई वस्तु मेरे पैर से टकरा गई और 'फूं' की आवाज ने मेरे इस ध्यान को तोड़ दिया। तुरंत जब मैंने उस वस्तु को देखा, मेरे मुख से चीख निकल गई और मैं उछलकर ऐसा खड़ा हुआ कि जैसे किसी ने बिजली के नंगे तार को छुआ दिया हो। वह सर्प था। शायद मेरी ठोकर से उसे क्रोध आया हो। वह एकाएक फुंफकारकर, फन फैलाकर खड़ा हो गया। इसे देख कुछ क्षणों तक तो मेरी सांस रुक गई। कड़ाके की ठंड में भी मैं पसीना-पसीना हो गया। हिल-डुल तक न सका ऐसा लगा मानो सभी अंगों ने जवाब दे दिया हो। मैं निष्प्राण प्रतिमा की भांति खड़ा रहा।

सर्प फन फैलाए खड़ा था। उसकी दो चमकीली आंखें मुझे लगातार घूरे जा रही थीं। मैं उसे ऐसे देख रहा था जैसे बकरा कसाई को देखता है। हम दोनों के बीच केवल डेढ़ फुट का फासला था। तभी सर्प को क्या सूझी की उसने अपने फन को धीरे से इधर-उधर हिलाया। मेरा तो हलक सूख गया। ऐसा लगा जैसे उसका फन हिलना मेरी मौत की सूचना हो। फिर वह अपने फन को धीरे-धीरे सिकोड़ने लगा। सिकोड़ने के बाद उसकी तेज आंखें एक बार फिर से घूरने लगीं। मुझे लगा कि वह हमला करने ही वाला है। फिर उसने अपना सिर धीरे-धीरे धरती पर रखा और मुड़कर तेजी से चलता हुआ दूर चला गया।

मेरी सांस में सांस आई, मैं पसीने से तर ब-तर था। इस घटना के बाद मैं कई दिन तक खेत पर नहीं गया। अभी भी कभी-कभी वह दृश्य मेरी आंखों में घूमने लगता है तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

□ तुकाराम साहू, ग्यारहवीं
मांढर, रायपुर

"नदी"

खल-खल कल-कल चली नदी
ऊंचे पहाड़ों से घिरी नदी
गाती जाती राह में नदी
मुसीबतों से न डरती

पत्थरों पर चढ़कर चलती नदी
कोई रोक नहीं पाता है।
कोई छेड़ नहीं पाता है।

हमेशा आगे-आगे जाती
वापस लौट कभी न आती
आस-पास फल-फूल सींचकर
सबको सुख पहुंचाती नदी

कभी धीमी कभी तेज
चलती जाती नदी
पशु-पक्षी की प्यास बुझाती
जंगलों से होकर जाती

गांव-गांव जाती नदी
सबकी प्यास बुझाती नदी
सबके काम आती नदी।

□ अर्चना बालके
छटवीं, कुक्षी, धार

एक मजेदार खेल

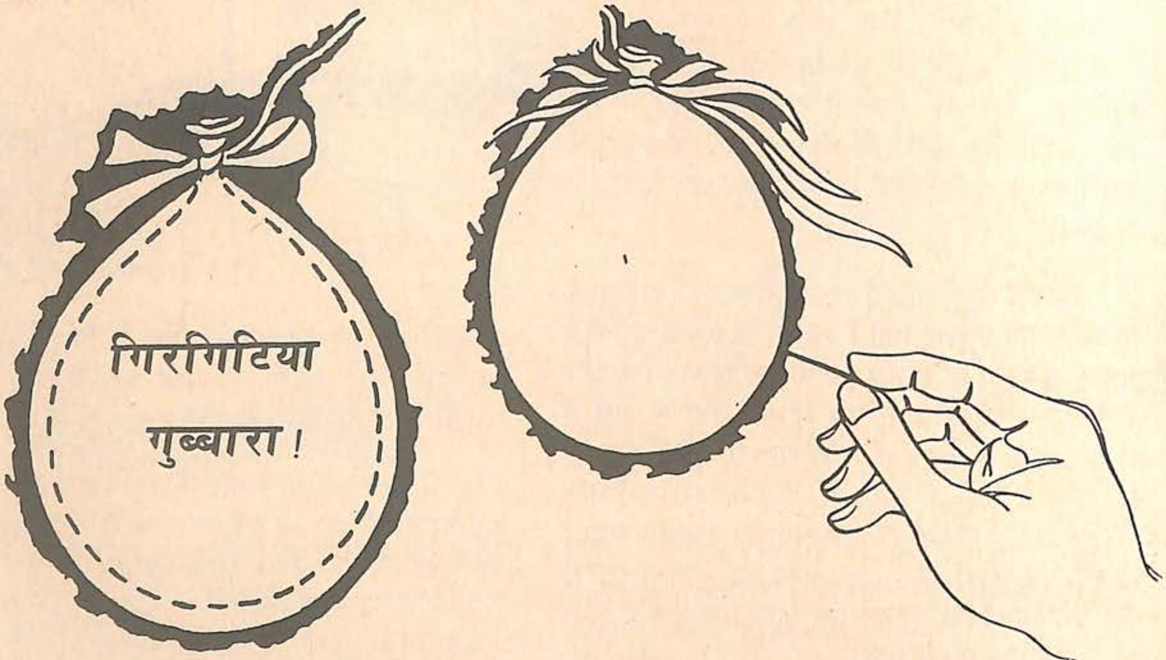

फूले हुए गुब्बारे में सुई चुभोई गई और आवाज हुई फटाक! फिर भी गुब्बारा फटा नहीं, सिर्फ उसका रंग बदल गया, पर यह हुआ कैसे?

दो अलग-अलग रंगों के गुब्बारे, धागे का टुकड़ा और एक पिन या सुई लो।

एक गुब्बारे को दूसरे के अंदर डालकर, अंदर वाले गुब्बारे में हवा भरकर फुला लो। ऐसा करने से बाहर वाला गुब्बारा अपने-आप फूलेगा। अब अंदर वाले गुब्बारे का मुंह बांधकर बाहर वाले गुब्बारे में थोड़ी-सी हवा और भरो ताकि दोनों गुब्बारों के बीच हवा की एक परत बन जाए। इस दूसरे गुब्बारे का भी मुंह बांध दो। लो, तुम्हारी तैयारी पूरी हो गई। तुम चाहो तो अब अपने प्रदर्शन के लिए गुब्बारे को बाहर किसी खंभे से लटका दो। हां, एक बात का ध्यान रखना कि गहरे रंग का गुब्बारा बाहर और हल्के रंग का अंदर होना चाहिए।

बस, अब अपना जादू या खेल दिखा डालो! तुम्हारे दर्शक इकट्ठे हो गए? तो सुई या पिन लो और बाहर वाले गुब्बारे में हल्के-से चुभा दो। फटाक की आवाज से बाहर वाला गुब्बारा फूट जाएगा। फूटने की आवाज आई, पर गुब्बारा फूटा नहीं! दर्शक चौंक जाएंगे। मजा तो तब आएगा जब लोग देखेंगे कि गुब्बारे ने अपना गिरगिटया रूप दिखा दिया!

अजय-विजय

एक कक्षा में दो लड़के अजय और विजय पढ़ते थे। अजय भगवान को बहुत ज्यादा मानता था। कोई कहता कि 'पढ़ाई करो' तो वह कहता कि 'भगवान मुझे पास कर देंगे।' विजय भगवान को मानता तो था, मगर भगवान के भरोसे कभी नहीं बैठता था। वह हमेशा अपनी पढ़ाई जारी रखता था।

परीक्षा के दिन पास आ गए तो अजय भगवान को खूब नारियल-प्रसाद आदि चढ़ाता और भगवान से प्रार्थना करता कि, 'हे भगवान, मुझे पास कर देना।'

विजय ने परीक्षा की तैयारी कर ली थी। इसलिए अर्धवार्षिक परीक्षा दी और अच्छे नंबर से पास हो गया। अजय परीक्षा में फेल हो गया।

जब अजय ने विजय से पूछा कि तुम भी भगवान की पूजा करते हो और मैं भी। मगर तुम पास हो गए और मैं फेल हो गया। ऐसा क्यों?

विजय ने उसको समझाया कि भगवान की पूजा करने से क्या होगा, जब हम पढ़ाई ही नहीं करेंगे? मैंने पढ़ाई की, इसलिये मैं पास हो गया।

अब अजय भी भगवान को मानने के साथ पढ़ाई अच्छी तरह करने लगा। और वार्षिक परीक्षा में पास हो गया।

□ गणपत सिंह चौहान, आठवीं
उज्जैन

दो कहानियां

□ सुधा चौहान

दिव्या अग्रवाल, सातवीं, भोपाल

शहर और जंगल

जंगल में पेड़-पौधों में, हवा में, सूरज की धूप में, बादलों में और जिस धरती पर पेड़-पौधे उगे हैं उनमें, सभी में बड़ी दोस्ती थी। इन सबका एक-दूसरे के बिना काम नहीं चलता था। वैसे ही जैसे घर में अम्मा का मुनिया के बिना, पिताजी का मुनिया और अम्मा के बिना और भैया का इन सब लोगों के बिना, चाहे वह काम एक-दूसरे को परेशान करने का ही क्यों न हो, पर एक दूसरे के बिना किसी का काम नहीं चलता था। मुनिया का घर तो छोटा सा था, पर पेड़ों का घर जो जंगल है न, वह कितना बड़ा है। एक किनारे खड़े हो जाओ तो दूसरे किनारे का पता ही नहीं चलता कि कहां खतम होता है। वैसे बगीचे के पेड़-पौधों का घर मुनिया के घर के समान ही छोटा होता है। पर ऐसा तो सब जगह होता है, किसी का घर बड़ा होता है तो किसी का छोटा, पर सबको अपना घर ही सबसे अच्छा लगता है।

सुभद्रा राठौर

जंगल के पेड़ों को भी जंगल में ही सबसे अच्छा लगता था। कभी-कभी हवा उनको छेड़ने के लिए कहती, तुम लोग शहर में चलो, वहां कितना मज़ा है। बड़ी-बड़ी मोटरें और ट्रक दौड़ते रहते हैं, सबेरे से रात तक न जाने कितने भोंपू पर कितने तरह के गाने सुनाई पड़ते हैं। कभी भी सन्नाटा नहीं रहता, रात तक में। शहर में मोटरों से, मकानों से, कारखानों से और न जाने कहां-कहां से इतना सारा धुआं निकलता है कि पूरे साल भर कभी भी बादलों की कमी नहीं अखरती। दिन में तुमको हजारों-लाखों आदमी दिखते हैं, पर जंगल में जैसा उनसे डर नहीं लगता कि कुल्हाड़ी उठाकर तुम्हें काटने लगेंगे। जंगल में तो बस सूखे पत्तों और सूखी टहनियों का ढेर भर लग जाता है। शहर में देखो जगह-जगह कितनी तरह की चीज़ों का ढेर लगा रहा है। उसमें तुम्हें क्या नहीं मिल जाएगा- टूटी बाल्टी, टांग टूटा सिपाही, खाने की सड़ी-गली चीज़ें, फटे चिथड़े, घिसे-पिटे जूते, न जाने क्या-क्या वहां रहता है, पर उसके पास जाना जरा मुश्किल होता है, बड़ी बदबू आती है। और क्या तुमने कभी शहर के पानी के डबरे देखे हैं। लगता है हरे-भरे पेड़ों की कमी को उन लोगों ने पानी को हरा-हरा रंगकर पूरा कर लिया है। पानी को हरी काई की चादर उढ़ा दी है।

पेड़ खड़े-खड़े सारी बातें ध्यान से सुन रहे थे। सारी बातें उनकी समझ में नहीं आ रही थीं। वे चल तो सकते नहीं थे कि जंगल के बाहर जाकर देखें पर ये बातें नई ज़रूर लग रही थीं। नई बातें होने पर भी उनका जी नहीं मानता था कि सबेरे-सबेरे चिड़ियों का गाना सुनने के बदले भोंपू का गाना सुनना ज्यादा अच्छा होगा।

तभी एक बहुत पुराने बरगद के पेड़ को एक बात याद आई। उसने फौरन अपनी पत्तियां हिलाकर इशारा किया कि वह कुछ बताना चाहता है। सारे जंगल के पेड़ एक-दूसरे को इशारा करते गए कि बरगद दादा कुछ बताना चाहते हैं। थोड़ी देर में यह संदेशा पूरे जंगल में फैल गया और सब पेड़ बरगद की बात सुनने को तैयार हो गए। बरगद ने बताया कि एक बहुत पुरानी चील से उसकी दोस्ती है। वह कभी-कभी आकर उसकी डाल पर आराम करती है और उसे दुनिया भर की बातें बताती है।

एक बार की बात है, चील किसी बड़े शहर से लौटी थी- वह कह रही थी कि बरगद दादा शहर में कितनी धूल उड़ती है।तुम्हारे जैसा हरा-भरा, चमकती पत्तियों वाला पेड़ वहां एक भी नहीं दिखता। लगता है वहां के हरे पेड़ों का रंग भी मटमैला हो गया हो। बेचारी हवा पेड़ों को साफ रखने की कितनी ही कोशिश करे, उन पर से धूल उड़ा दे पर वह धूल भी क्या करे, कहीं तो बैठेगी। पेड़ों से उड़कर घरों में, सड़क पर, मोटर-गाड़ियों पर, दुकानों पर, कहां-कहां नहीं बैठती। फिर जब वहां से उड़ाई जाती है तो फिर पेड़ों पर पहुंच जाती है। हर समय बड़ी-बड़ी गाड़ियां धरती को रौंदकर धूल तैयार भी तो करती जाती हैं। बरगद दादा, तुम कितने किस्मत वाले हो कि इतनी खुली-खुली अच्छी जगह रहते हो। तो भाई, जंगल के पेड़ो, बताओ तुम लोग क्या सोचते हो? शहर से अपना जंगल ज्यादा अच्छा है न?

सब पेड़ों को बरगद की बात ठीक लग रही थी। वह उनके मन की बात थी। वे लोग अपना जंगल का घर बदलने के लिए कभी तैयार नहीं होंगे। पर एक छोटा-सा आम का पेड़ था वह कोई भी बात बिना बहस किए मानता ही नहीं था। बोला, बरगद दादा जब जंगल इतना अच्छा है तो लोग शहर में क्यों रहते हैं, जंगल में रहने क्यों नहीं आ जाते?

बरगद बेचारे को ये बात मालूम नहीं थी। वह बोला, अगली बार जब चील आएगी तो मैं उससे पूछकर बताऊंगा। उसे बहुत सारी बातें मालूम हैं। वह दूर से सारी चीज़ें साफ-साफ देख लेती है, शायद इस बात को भी जानती हो।

हेमन्त कुमार, पांच वर्ष, छोटे डोंगर, बस्तर

बादल और पेड़

बहुत पहले से, इतने पहले से कि लोगों को याद भी नहीं कि कब से पेड़ों और बादलों में बहुत पटती थी। यों तो पेड़ एक ही जगह धरती पर जड़ जमाए खड़े रहते थे। हवा उनकी डालियों और पत्तों के बीच जब देखो तब लुकाछिपी खेला करती थी। चिड़ियां सवेरे-सवेरे गाना गाकर उन्हें जगाती थीं और उनके फूल और फल दूर-दूर तक ले जाकर उनकी नई-नई संतानों को उगाती थीं। सूरज अपनी किरणों से उनकी पत्तियों में चमक लाता था और उनके फूलों को रंग और खुशबू से भर देता था। और जब उनमें फल लगते थे तो उन्हें पकाता भी था। इन सभी लोगों को पेड़ बहुत अच्छे लगते थे, और पेड़ भी इन सबको बहुत चाहते थे, पर बादलों की बात ही और थी। जब कभी आसमान पर काले-भूरे बादल दिखाई पड़ते तो पेड़ों की खुशी का क्या कहना! लगता कि अपने पत्तों के हज़ारों-हज़ार हाथ हिला-हिला कर वे उन्हें बुला रहे हैं कि आओ, आओ- जल्दी आओ। ये पूरी गर्मी भर तुम कहां चले गए थे। तुम्हारे बिना तो हमें चैन ही नहीं पड़ती थी। जब बादल झमाझम बरसते तो पेड़ आंखें बंद करके खूब तृप्त होकर भीगते और तब वे खूब झूम-झूमकर पत्तियों की ताली बजाकर अपने दोस्त बादलों को अपनी खुशी जताते थे।

बादलों को भी पेड़ों से मिलकर बहुत अच्छा लगता। कोई भी अगर अपने मित्र का इतनी खुशी से और दिल खोलकर स्वागत करे तो किसे अच्छा न लगेगा? और सच तो यह है कि बादल ऊपर-ऊपर आसमान में उड़ते हुए नीचे झांककर देखते जाते और जहां कहीं हरे-भरे ऊंचे-ऊंचे पेड़ दिखते कि फिर उनका उड़ते चले जाने को जी ही नहीं होता। उन्हें लगता कि ये बड़े-बड़े पेड़ उन्हें बुला रहे हैं कि कुछ देर तो रुको, हमारे पास आओ। तुम हमें पानी देकर मानो जिंदगी देते हो। देखो, हम उस पानी का कितना अच्छा उपयोग करते हैं। हमारी ढेरों शाखाएं निकल आती हैं, उन पर ढेर-सी पत्तियां और फल-फूल लग जाते हैं। कितने सारे पक्षी आकर हम पर बसेरा करते हैं। हम तुम्हारे एक बूंद पानी को भी बरबाद नहीं होते देते। सबको संभालकर धरती के पास रखते हैं। ये बातें सुनकर बादलों का जी खुश हो जाता। वे फिर से पेड़ों को अपने पानी से नहला देते और पेड़ संतोष से अपनी जगह खड़े रहते।

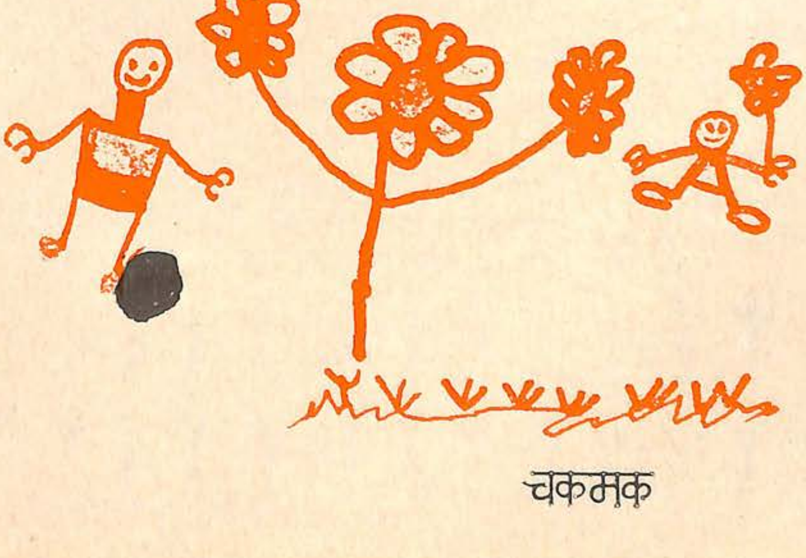

मनीष स्यागा, दूसरी, देवास

उमंग चौहान, चौथी, भोपाल

बादल पेड़ों से खुश क्यों न हों? बादल जो पानी लाते हैं वह क्या आसानी से आता है। सारी गर्मी भर धूप में तपकर तब कहीं बादलों का पानी इकट्ठा होता है। इसीलिए तो जहां-कहीं भी पेड़-पौधे नहीं होते, नीचे बंजर सूखी-सूखी सी धरती होती है वहां बादलों का उतरने का जी ही नहीं होता। वहां उनका इतनी मुश्किल से इकट्ठा किया पानी बेकार में बह जाए, या बाढ़ बनकर लोगों को सताए तो उनका जी दुखी हो जाता है।

पर इन दोनों की दोस्त जो हवा है न वह बहुत शैतान है, जब तक कोई छेड़छाड़ न हो, छोटा-मोटा लड़ाई झगड़ा न हो, उसे मज़ा ही नहीं आता। दोस्ती तो उसकी भी सबसे थी पर उसे बीच-बीच में थोड़ी नोंक-झोंक अच्छी लगती थी। बादल हवा की गाड़ी में चढ़कर ही तो सारी दुनिया में घूमते थे। एक बार ऐसा हुआ कि पेड़ और बादल एक-दूसरे से मिलकर इतने खुश हुए कि उन्हें न पास खड़ी हवा का ध्यान आया, न सूरज का, न धरती का। बस वे एक दूसरे से ही मगन हो बातें करते रहे। हवा ने काफी देर राह देखी कि कोई तो उसकी तरफ ध्यान देगा, पर जब किसी ने उसे नहीं देखा तो वह गुस्सा हो गई। उसने सोचा कि मैं कहीं दूर जाकर छिप जाऊं तब देखो ये लोग क्या करते हैं।

अब भाई हवा के छिपने से ऐसा हुआ कि बादल जो आसमान पर छाए तो कहीं और जाने का नाम ही न लें। लगातार सात दिन तक बादल छाए रहे और पानी बरसता रहा। अब तो पेड़ों की भी मुसीबत आई। पानी में भीगते-नहाते, पानी पीते-पीते वे थक गए। बाकी कोई और दोस्त दिख ही नहीं रहा था, न हवा ने आकर उन्हें झकझोरा, न सूरज ने आकर पत्तियों को चमकाया। बेचारे मन मारे उदास से जंगल में खड़े थे। चिड़ियां अलग परेशान थीं कि धूप तो निकलती नहीं, कैसे वे बाहर जाकर दाना चुगें। हिरन बड़ी हिम्मत करके घास चरने निकलते, पर भीगी-भीगी, मिट्टी सनी घास उन्हें पसंद ही नहीं आती। बादल भी थक गए थे। बरसते-बरसते उनका सारा पानी चुका जा रहा था। और उन्हें अभी बड़ी दूर-दूर तक पानी पहुंचाना था। बस मेंढक भर बहुत खुश थे। कीचड़ पानी में कूद-कूदकर टर्र-टर्र कर इतना शोर मचा रहे थे कि पूछो मत। न चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई पड़ रही थी, न जानवरों की बोलियां और न पत्ती की सरसराहट। बस मेंढकों की टर्र-टर्र के मारे कान फटे जा रहे थे। हवा थोड़ी नाराज भर थी, मन की बुरी थोड़े ही थी। जब सब लोगों की इतनी परेशानी देखी तो भागी आई। पेड़ों को झकझोरा तो उनकी पत्तियों का पानी झड़ गया। बादलों को बिखेरा तो सूरज झांकने लगा, चिड़ियां चहचहाने लगीं। बादलों का भी काला रंग बिखर कर उनमें कई-कई रंग दिखने लगे, मानो वे भी मुस्करा रहे हों।

पेड़ बहुत समझदार होते हैं। वे अपनी धरती मां को बहुत प्यार करते हैं और उसका कहना मानते हैं न, इसीलिए उन्होंने बादलों से कहा कि सबसे मिलकर दोस्ती करना ठीक रहता है। अकेले-अकेले दोस्ती में कभी-कभी गड़बड़ हो जाती है। बादल भी ये बात समझ रहे थे। वे हंसते हुए हवा का हाथ पकड़कर दूसरे जंगलों के पास चल दिए। उन्हें खुद ही लग रहा था कि एक जगह रुके रहने से बाकी सब काम नहीं हो पाते और अच्छी भली दोस्ती खटाई में पड़ जाती है।

सुमित चौधरी, पांचवी बिलासपुर

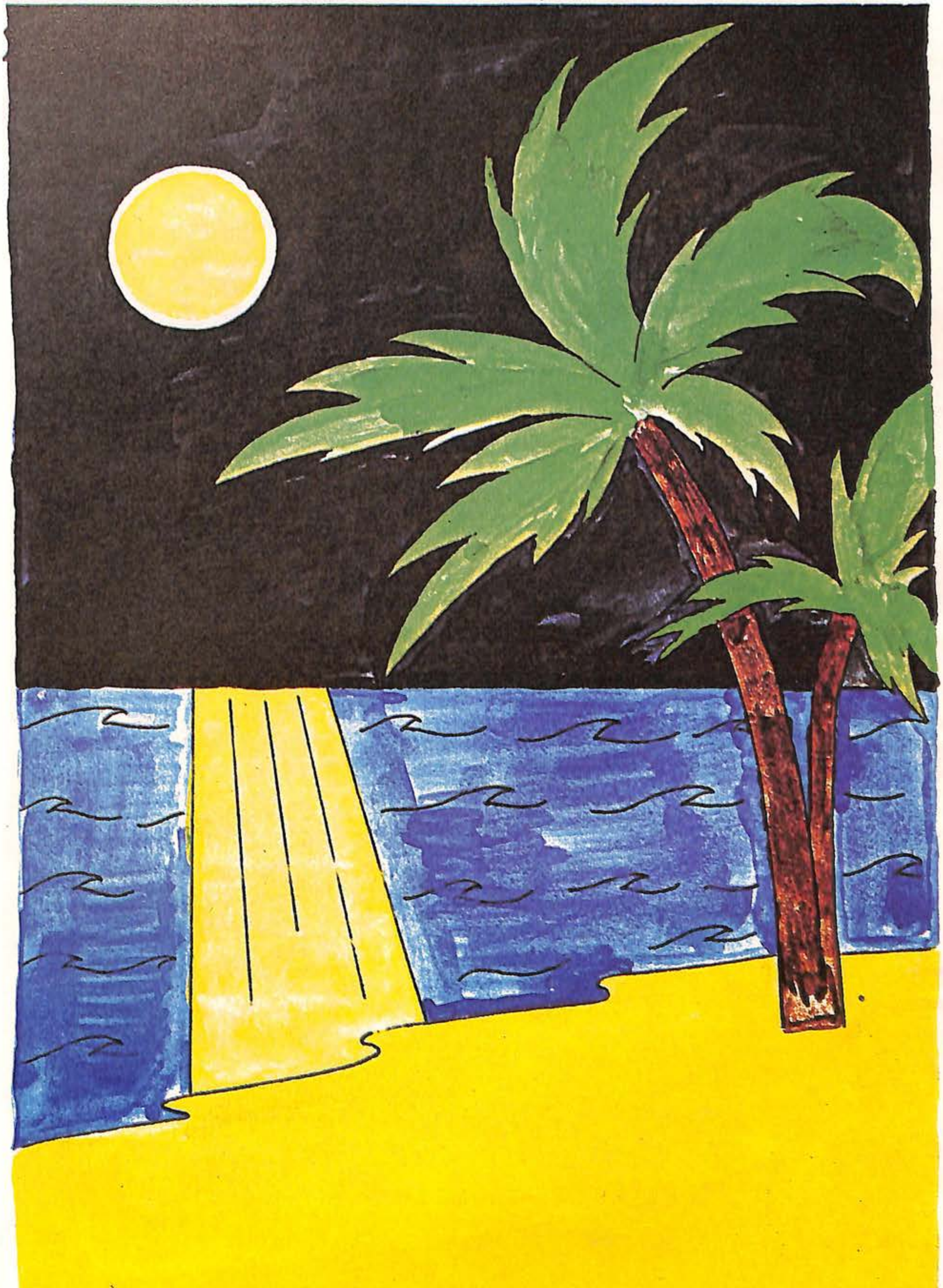

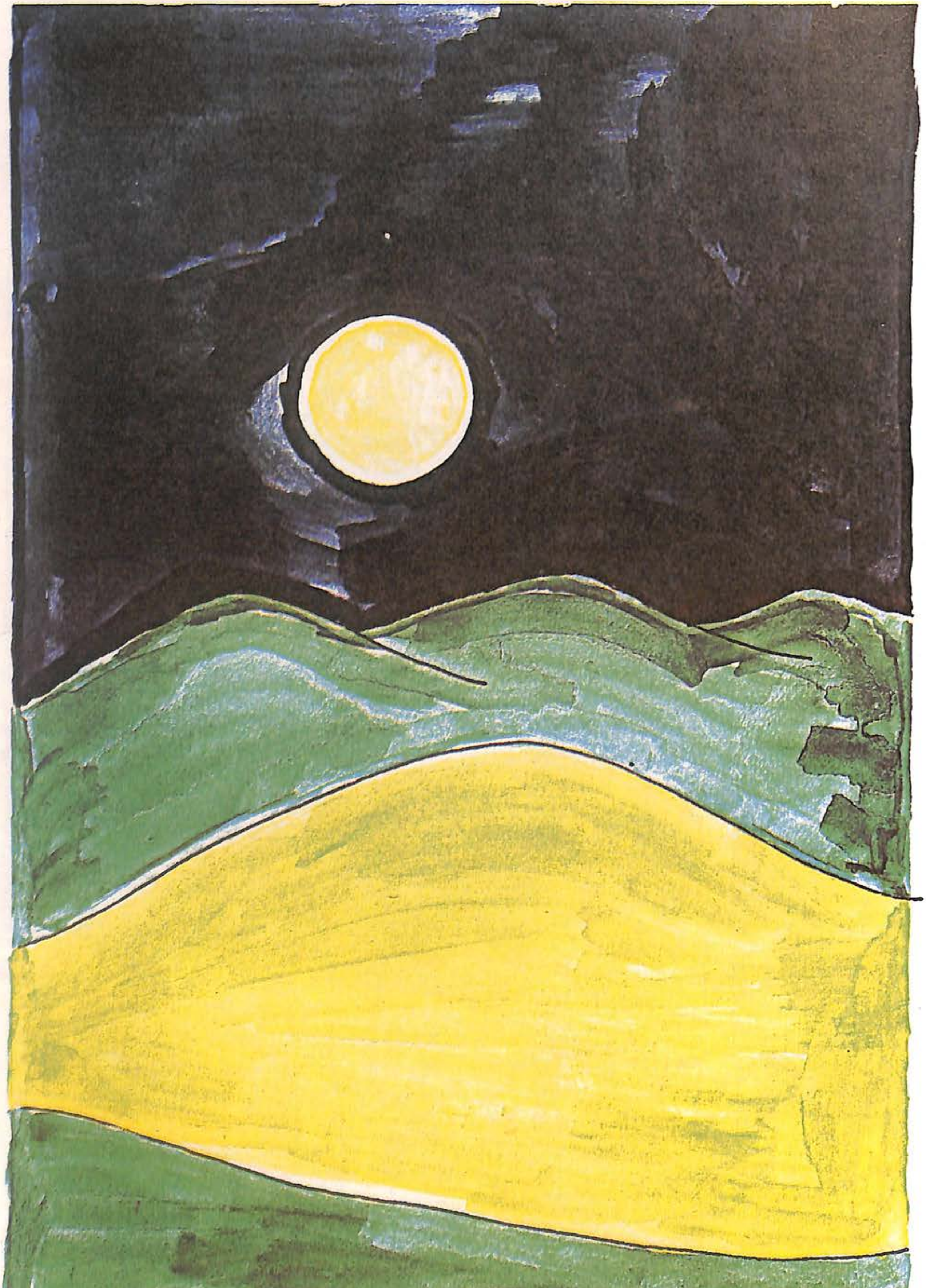

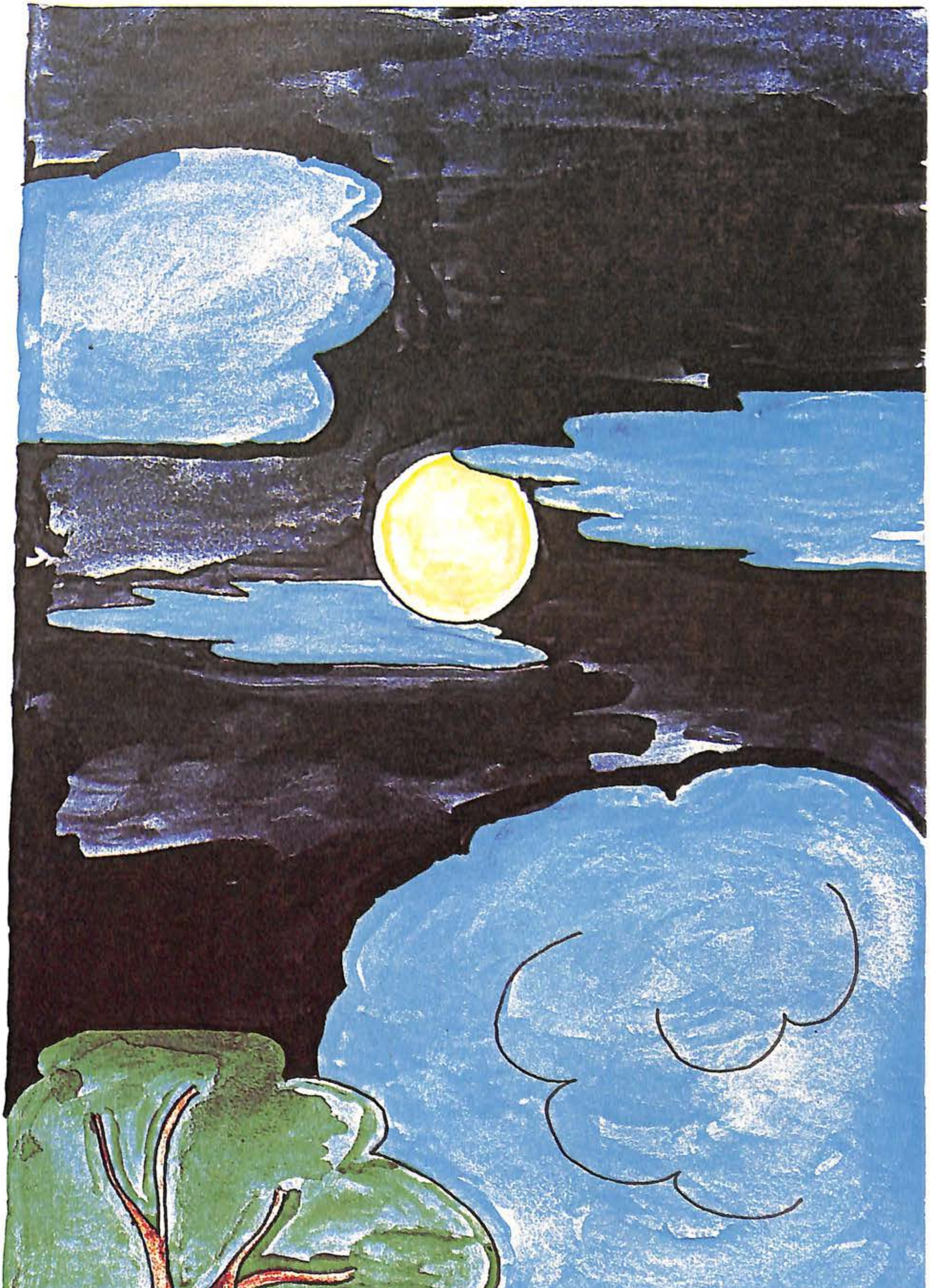

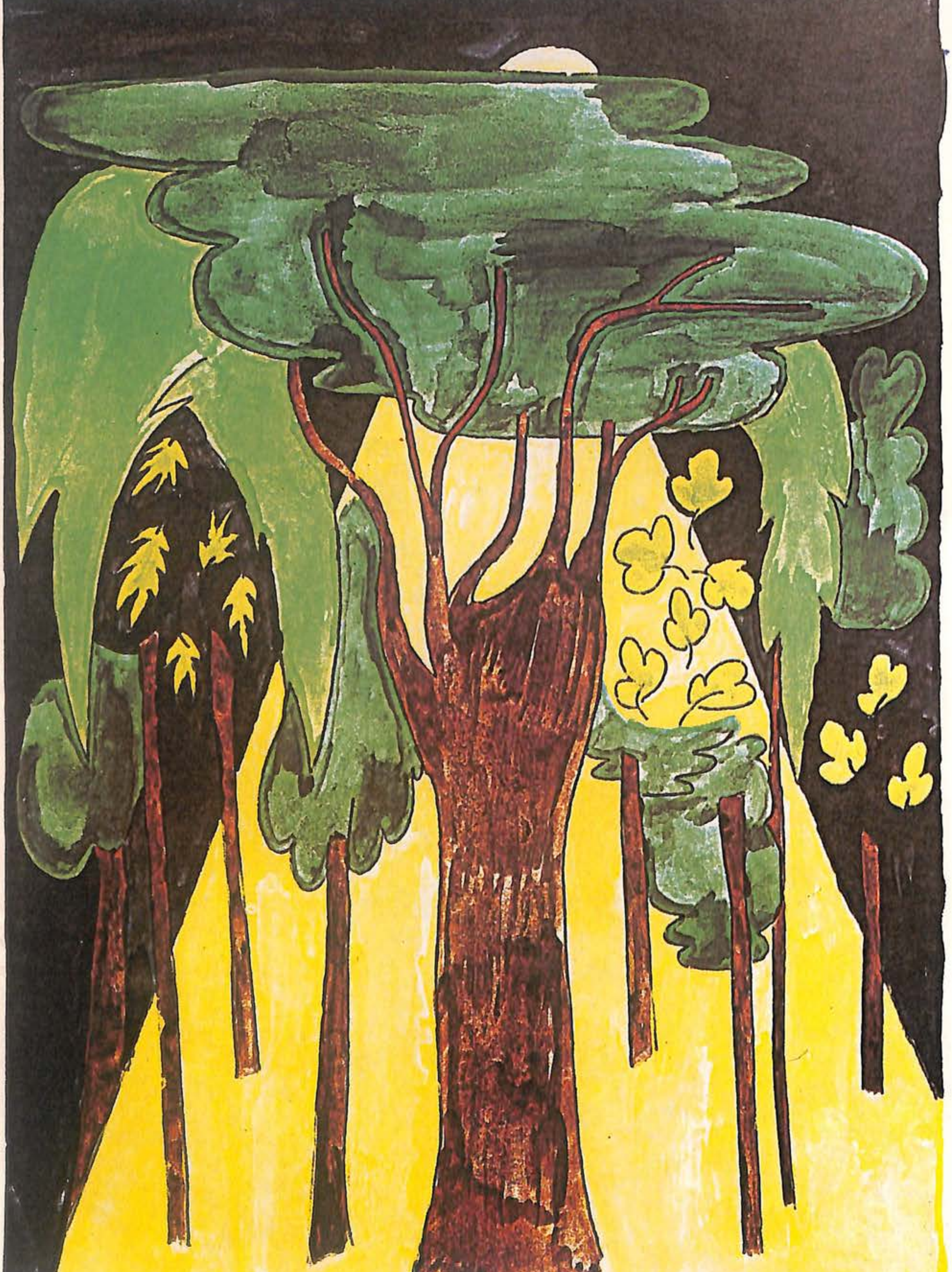

खेल खेल में

3	5	7	9	11	1
13	15	17	19	21	23
25	27	29	31	33	35
37	39	41	43	45	47
49	51	53	55	57	59

कार्ड-1

17	18	19	20	21	16
22	23	24	25	26	27
28	29	30	31	48	49
50	51	52	53	54	55
56	57	58	59	60	31

कार्ड-4

किसकी आयु कितनी?

3	6	7	10	11	2
14	15	18	19	22	23
26	27	30	31	34	35
38	39	42	43	46	47
50	51	54	55	58	59

कार्ड-2

9	10	11	12	13	8
14	15	24	25	26	27
28	29	30	31	40	41
42	43	44	45	46	47
56	57	58	59	60	13

कार्ड-5

5	6	7	13	12	4
14	15	20	21	22	23
28	29	30	31	36	37
38	39	44	45	46	47
52	53	54	55	60	13

कार्ड-3

33	34	35	36	37	32
38	39	40	41	42	43
44	45	46	47	48	49
50	51	52	53	54	55
56	57	58	59	60	46

कार्ड-6

तुम अपने दोस्तों की, बगैर उनसे पूछे आयु यानि उम्र का एकदम सही एलान कर सकते हो। इसमें कोई जादू या चमत्कार नहीं है, बस थोड़ी सी माथापच्ची। ध्यान से नीचे दिए ब्यौरे और इन कार्डों को समझ लो।

यहां अंकों से भरे छह कार्ड दिए गए हैं। इन छह कार्डों में ही तुम्हारे हर साथी की आयु दर्ज है। अपने साथी को ये छह कार्ड दिखाकर पूछो कि किन-किन कार्डों में उसकी आयु का अंक है। जब वह उन कार्डों को बता दे तो झट-से उन कार्डों के ऊपर, सीधे सिरे पर, बाएं कोने में लिखे अंकों को जोड़कर तुम अपने साथी की आयु बेहिचक बता दो। देख लेना, तुम्हारा साथी दंग रह जाएगा!

एक उदाहरण द्वारा इस खेल को ठीक से समझ लो: मानलो, नंदू की उम्र 10 साल है, तो 10 का अंक कार्ड नं. 2 और 5 में है। अब 2 और 5 नं. के कार्ड के कोने में, ऊपर बाएं 2 और 8 के अंक हैं। तो 2 और 8 का जोड़ 10 हुआ।

अब मानलो, किसी साथी ने अपनी आयु कार्ड नं. 1, 2, 3 और 5 में लिखी पाई। इन कार्डों के बाएं कोने के ऊपर के अंक क्रमशः 1, 2, 3 और 8 हैं। इनका जोड़ 1 + 2 + 4 + 8 = 15 हुआ। इसलिए उस साथी की आयु 15 साल थी। इसी तरह तुम इन कार्डों की मदद से अपने हर किसी साथी की उम्र बता पाओगे।

कागज के बर्तन पर पानी उबालो

आवश्यक सामान

मोटे कागज़ की शीट, पेपर क्लिप, पानी और आग।

धातु के बर्तन में पानी उबालना तो हम सबके घर में रोजमर्रा की क्रिया है, पर जब बर्तन **कागज़** का हो और पानी से भरकर आग की लौ पर रखा हो और पानी उबलने लगे, यह तो बड़ी अजीब बात है! तुम्हें सुनते ही लगा होगा कि यह तो हो ही नहीं सकता! भई, कागज तो आग पकड़ लेता है!

तैयारी

चलो, उबाल देखो कागज के बर्तन पर पानी। चित्र में जैसा दिखाया गया है, ठीक उसी प्रकार पेपर क्लिप लगाकर कागज से एक कटोरी या तश्तरी बनाओ। इस कागज की कटोरी में पानी भरो और जलती हुई मोमबत्ती

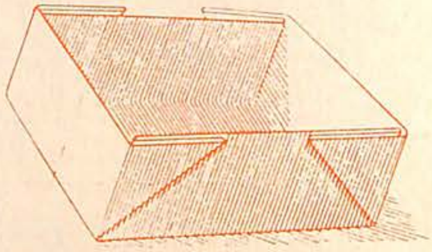

की लौ पर रखो। बस, एक सावधानी रखना, आग की लौ कागज के उस भाग को न छू पाए जो पानी से डूबा नहीं है। साथ ही बर्तन के कोने भी लौ से बचे रहें।

कुछ ही देर में पानी उबलने लगेगा और कागज भी नहीं जला। इस क्रिया में पानी उस सारे ताप को सोख लेता है, जो कागज लौ से प्राप्त करता है। इस तरह कागज 212^0F से अधिक गर्म हो ही नहीं पाता, क्योंकि यही पानी का क्वथनांक है।

गमले लगाओ

तुम्हें अपने घर में हरे-भरे फूल और पौधों के गमले सजाकर रखने का शौक तो होगा ही। पर तुममें से अधिकतर तो इसलिए ये शौक पूरा नहीं कर पाते, क्योंकि जब पूरे परिवार के सदस्य अधिक दिनों के लिए घर से बाहर चले जाते हैं, तब इन फूल-पौधों में पानी आदि की देखभाल कैसे होगी?

चलो, तुम्हारी अनुपस्थिति में भी इनको पानी पिलाने की समस्या का हल तुम्हें बता ही देते हैं,ताकि तुम भी अपने-अपने घरों में गमले सजाकर रखने का शौक पूरा कर सको।

आवश्यक सामान

पौधा लगा एक गमला, पानी से भरा बर्तन, कच्चे सूत वाली डोरी।

एक ऊंचे से बड़े बर्तन (ड्रम, टब, कोठी) को किसी ऊंची जगह पर रखकर उसके नीचे गमले को जमा दो। अब कच्चे सूत वाली डोरी का एक सिरा गमले की मिट्टी में दबाकर दूसरे सिरे को पानी से भरे बर्तन में डुबा दो। इतना करने से ही डोरी के सहारे होता हुआ पानी नीचे गमले में उतरने लगेगा। वैज्ञानिक भाषा में इस क्रिया को **केशिकीय-आकर्षण** कहते हैं। बर्तन में जब तक पानी रहेगा तब तक यह क्रिया लगातार चलेगी, इसलिए जितने दिन के लिए तुम यानि सारा परिवार बाहर रहे, बर्तन का आकार उसी हिसाब से तय करना। और हां, जितने भी गमले रखो सबके लिए डोरी अलग-अलग इस्तेमाल करना, पर बर्तन एक ही रहेगा।

यह प्रयोग करना और देखकर बताना कि तुम्हारे घर में अपने-आप पौधे सींचने वाला माली का काम कितना सही या अच्छा रहा।

फोटोप्रिंट निकालो

आवश्यक सामान

कागज़- जिस पर फोटो या नाम छापना हो, ट्रेसिंग पेपर, एक दफ्ती 10x15 सेंटीमीटर, एक कांच का टुकड़ा 10x15 सेंटीमीटर, काली स्याही, पेंटिंग ब्रुश, एक क्लिप।

फिल्टर पेपर या ब्लाटिंग पेपर, पोटेशियम फैरिक सायनाइड, फैरिक अमोनियम साइट्रेट।

(यह सामग्री बाजार में केमिकल्स की दूकान या पास की उच्च मा.शा. की प्रयोगशाला से प्राप्त कर सकते हो।)

तैयारी

5 ग्राम पोटेशियम फैरिक सायनाइड तथा 7 ग्राम फैरिक अमोनियम साइट्रेट को अलग-अलग लगभग 28 ग्राम पानी में घोल लो और फिल्टर पेपर से छानकर इन दोनों रासायनिक घोलों को दो अलग-अलग शीशी में भरकर रख लो।

अब तुम्हें अगर अपना नाम या कोई स्केच छापना है तो सबसे पहले तो तुम्हें उसका नेगेटिव बनाना होगा। नेगेटिव ट्रेसिंग पेपर पर काली स्याही से बनेगा। ट्रेसिंग पेपर पर पेंसिल से अपना नाम या जो कुछ बनाना चाहते हो बना लो। फिर ब्रुश से उस पर काली स्याही फेर दो। सूखने पर यह तुम्हारा नेगेटिव का काम करेगा। हां, यदि तुम्हें कोई फोटो ही छापनी है तो कैमरे से खींचा गया नेगेटिव ही काम दे जाएगा।

अब दोनों बोतलों में से आवश्यकतानुसार मात्रा में घोल लेकर एक बर्तन में मिला लो। इस नए तैयार घोल को ब्रुश से उस कागज पर अच्छी तरह लगा लो जिस पर तुम प्रिंट उतारना चाहते हो। यह घोल हरे रंग का होता है, इसलिए कागज पर छूटी हुई जगह देखने में तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी। इस कागज को किसी बंद कमरे में सुखा लो।

बस, अब तुम्हें प्रिंट उतारना है। इस कागज को लेकर दफ्ती पर रखो और फिर नेगेटिव या ट्रेसिंग पेपर रखकर ऊपर से कांच के टुकड़े से दबाकर क्लिप से कस दो। याद रखना, यह काम करते समय धूप जरूर होना चाहिए, क्योंकि इतनी तैयारी के बाद अब लगभग 15 मिनट की खुली धूप इसे जरूर चाहिए।

धूप खिलाने के बाद कागज को निकालो। ध्यान से देखने पर तुम्हें कुछ भाग हरा और कुछ नीला नजर आएगा। जब इस कागज को साफ पानी से अच्छी तरह धो डालो, तो हरा रंग साफ हो जाएगा और अंदर से कागज का असली रंग उभर आएगा। इसे सुखाने के लिए अब अखबारों की तहों के बीच में रख दो। बस, कागज के चारों तरफ से फालतू हिस्सा काट दो और तुम्हारा प्रिंट तैयार है।

फिल्टर गड्ढा

प्रायः गांवों में यह देखा जाता है कि गली-मुहल्लों में निकास के लिए नाली आदि की व्यवस्था न होने पर घरों में उपयोग किया गया पानी बहकर सड़क या रास्तों में जमा होता रहता है। समस्या से निपटने के लिए गांव में ही मौजूद सस्ते और सरल साधनों से एक फिल्टर गड्ढा बना सकते हैं।

आवश्यक सामान **: 2 किलो लकड़ी का कोयला, 2 किलो खड़ा नमक, 5 किलो राख, 7–8 टोकरे भर जामुन के सूखे पत्ते, एक बड़ा मटका।**

विधि : सबसे पहले घर के पास जहां, पानी का इस्तेमाल होता है वहां पर चार-पांच फुट गहरा गड्ढा खोद लो। गड्ढे का व्यास इतना हो कि उसमें मटका भी समा जाए।

अब गड्ढे में सबसे पहले नमक को बारीक कर उसकी एक तह डालो, फिर कोयला, जामुन की पत्तियां बिछाकर गड्ढे को करीब आधा भर लो। मटके में नीचे एक छेद करके गड्ढे में रख लो। अब एक पाइप को पानी के निकास द्वार से जोड़कर घड़े में लटका दो। बस, बन गया फिल्टर गड्ढा! गंदा पानी मटके छेद से नीचे सोख लिया जाएगा। जब मटका पानी से भर जाए तो गड्ढे से निकालकर पानी उलीच दो और फिर मटके को गड्ढे में जमा दो।

□ राजेंद्र नामदेव
ब्यावरा, होशंगाबाद

ऐसा क्यों?

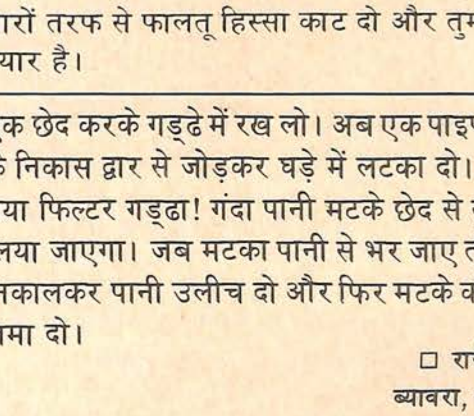

डिब्बी पर जलती हुई सिगरेट रखी है। उसके दोनों सिरों से धुंआ निकल रहा है। जलते सिरे से निकलता धुआं ऊपर की ओर, पिछले सिरे से निकलने वाला धुआं नीचे की ओर बैठ रहा है, क्यों?

माथा पच्ची

(1)

डैनों सहित 12 मीटर की चौड़ाई वाले हवाई जहाज का चित्र उस समय खींचा गया, जब वह ठीक कैमरे के ऊपर से उड़ रहा था। कैमरे की गहराई (लेंस से पर्दे की दूरी) 12 सेंटीमीटर है और चित्र का आकार 8 मिलीमीटर है।

चित्र खींचते समय हवाई जहाज कितना ऊंचा उड़ रहा था?

(2)

एम.ए. कर लेने के बाद रमेश को दो कंपनियां 2500 रुपये प्रति वर्ष पर नौकरी देने को तैयार थीं। इसके अलावा अगले पांच वर्षों तक कंपनी 'क' ने 500 रुपये वार्षिक तथा कंपनी 'ख' ने 125 रुपये प्रति छह महिने में बढ़ाने का वायदा भी किया।अपने पिता के मना करने पर भी रमेश ने कंपनी 'ख' की नौकरी स्वीकार की। बताओ क्यों?

(3)

220 गज लंबी एक झाड़ी के साथ-साथ बराबर दूरी पर 23 पेड़ लगाए गए। पहला पेड़ झाड़ी के आरंभ में है।

बता सकते हो पेड़ों के बीच कितना अंतर है?

(4)

अगर 50 मुर्गियां 50 दिन में 50 किलोग्राम दाना खाती हैं, तो 5 मुर्गियां 5 दिन में कितना दाना खाएंगी?

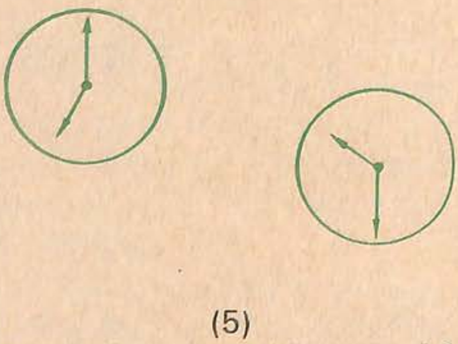

(5)

चित्र में घड़ियों की सुइयों के बीच कितने डिग्री के कोण हैं? उत्तर कोण-मापी चांद की मदद से नहीं, बल्कि तर्क से देना है।

(6)

चित्र में पानी से भरा एक बर्तन है जिसके मुंह पर एक ढक्कन (काग) है। इसी काग में से होकर मांच की एक नली बर्तन के अंदर है। बर्तन में अ, ब, स तीन पानी के निकास द्वार हैं।

अब चित्र और इस विवरण के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर दो:

यदि नली के निचले सिरे के पास स्थित निकास द्वारा 'ब' को खोल दिया जाए तो (1) पानी कितनी तेजी से बाहर निकलेगा। (2) या बिल्कुल ही नहीं निकलेगा? कारण सहित जवाब दो।

(7)

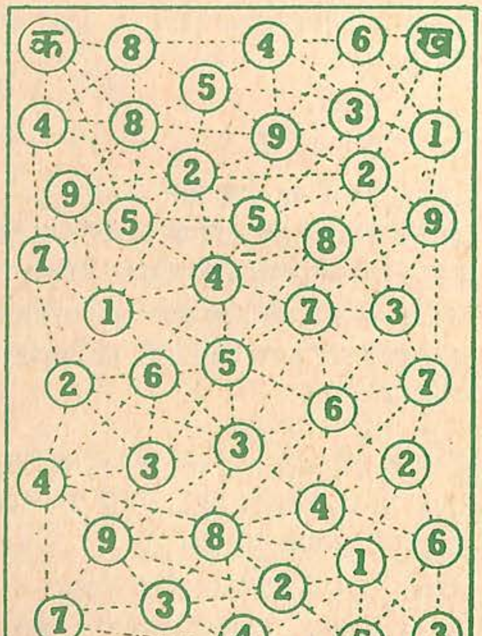

इस चित्र में 'क' से चलकर 'ख' तक पहुंचना है तुम किसी भी रास्ते से जा सकते हो। शर्त ये है कि तुम जिन-जिन अंकों से होकर गुजरो अंत में उनका कुल जोड़ 100 आना चाहिए।

इस शब्द पहेली को दिए गए संकेत वाक्यों के आधार पर भरना है। शब्द दो तरह से आएंगे, कुछ बाएं से दाएं तथा कुछ ऊपर से नीचे। दोनों के लिए अलग-अलग संकेत वाक्य हैं।

पहेली में लिखे नंबरों के आगे या नीचे जितने खाने खाली हैं, उतने ही अक्षरों का शब्द होगा। किसी खाने में आधा या संयुक्त अक्षर भी आ सकता है। हां, कोई खाना खाली नहीं रहेगा।

उदाहरण के लिए हम पहेली में 10 नंबर को भरना चाहते हैं। यह नंबर दोनों तरह के वाक्यों में हैं। 10 नंबर के दोनों वाक्य पढ़ो और देखो क्या भरे हुए शब्द ठीक हैं। बस, ऐसे ही यह पहेली हल होगी।

सही हल भेजने वालों को चकमक का एक अंक भेजा जाएगा और नाम भी प्रकाशित होंगे।

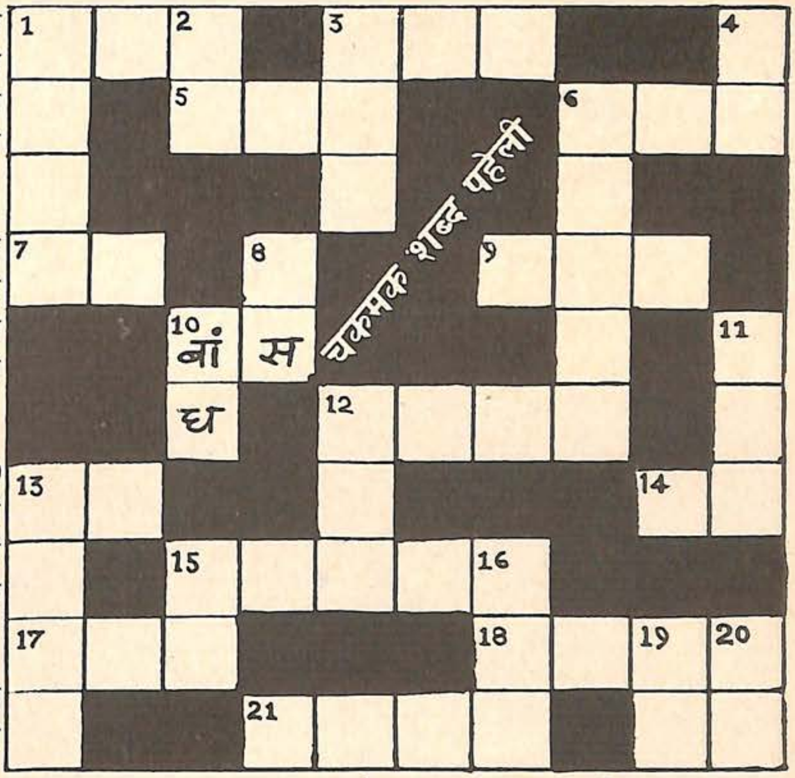

संकेत वाक्य बाएं से दाएं

1. जान है तो.......... है।
3. पंजाब का एक प्रसिद्ध पेय
5. कहते हैं लोहे तक को चटकर जाती है।
6. .... न होते तो वर्षा नहीं होती।
7. सांस की एक बीमारी
9. एक महीना, एक मौसम और एक त्यौहार भी।
10. यह कागज जिससे बना है।
12. धुआं भी एक कारण है.......... का।
13. पदार्थ में कई.......... होते हैं।
14. कृषि में इसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।
15. पृथ्वी.......... की एक सदस्य है।
17. एक पेड़।
18. भारत हमारी.......... है।
21. .... करे न चाकरी।

संकेत वाक्य ऊपर से नीचे

1. कई ग्राम पंचायत मिलकर एक पंचायत बनाती हैं।
2. जल की स्त्रोत
3. ईंधन भर नहीं, बहुत कुछ।
4. अकेला चना नहीं फोड़ सकता।
6. चकमक का यह अंक जिस विषय कर केन्द्रित है।
8. पदार्थ की एक अवस्था।
10. पानी की तिजोरी।
11. भालू को चींटी और...... बहुत प्रिय है।
12. पौधों के भोजन हेतु आवश्यक।
13. एक पोशाक
15. आम के आम, गुठलियों के दाम
16. अंत कटे तो विद्युत बनूं, मध्य कटे तो कीचड़! आरंभ कटे तो धन हूं, वैसे मैं हूं जड़!
19. सबको लगती है।
20. भोपाल गैस दुर्घटना में निकली गैस।

उत्तर : मई अंक के

1. 66 मीटर
2. जाने का रास्ता : 16 किलोमीटर
3. आने का रास्ता : 18 किलोमीटर
4. 3 लोग
5. 15 मिनट
6. 14 बच्चे, 1 स्त्री, 5 पुरुष
7. 8 लिटर
8. $1\frac{1}{2}$ किलोमीटर प्रति घंटा।

9.

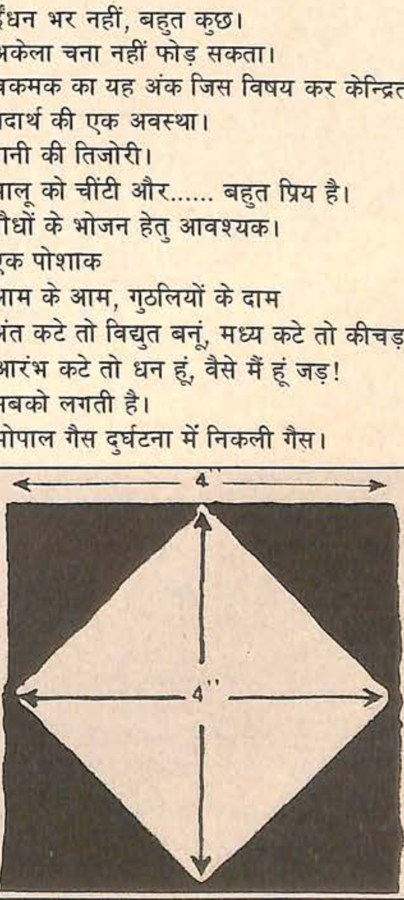

गिलहरी, चिड़िया और मैं

□ रुस्तम

गिलहरी रोटी खाती है
रोटी जो मैंने फेंकी है
चिड़िया देखती है दूर से
फिर उड़कर पास आती है
और झपटती है रोटी पर
गिलहरी छोड़ती नहीं रोटी को
चिड़िया छीनती है
गिलहरी और चिड़िया में लड़ाई है
रोटी पर
रोटी जो मैंने फेंकी है
फालतू समझकर ●

छोटी सी गिलहरी
मेरे कमरे में आती है
रोटी खाने के लिए
रख छोड़ता हूं कमरे में जो रोटी
फालतू समझकर

गिलहरी जानती है कि मैं कमरे में हूं
मुझसे डरती है गिलहरी
संभल-संभल कर आती है
रखती है एक आंख मुझ पर
ज़रा-सा हिलता हूं
तो जाती है भाग

जाने क्या सोचती है गिलहरी
मेरे बारे में
नन्हीं-सी गिलहरी
जाने क्यों डरती है मुझसे
रोज आती है मेरे कमरे में
रोज मुझसे डरती है। ●

छाया: चंद्रा जैन

आश्चर्यलोक में एलिस

पिछले अंकों में तुमने पढ़ा

इंग्लैंड के एक हरे–भरे कस्बे में बाहर एलिस खेल रही थी। तभी उसने एक विचित्र खरगोश देखा जो वास्कट पहने अपनी घड़ी को बार–बार देख रहा था। वह जिज्ञासा से खरगोश के पीछे भागी। खरगोश तेजी से बिल में घुस गया, उसके पीछे एलिस भी। एलिस को लगा जैसे वह पृथ्वी के आर–पार बनी किसी सुरंग में गिर रही है और काफी देर बाद उसे ऐसा लगा जैसे वह पुआल के ढेर पर धम्म से गिरी हो। उसने अपने को एक बड़े से हाल में पाया। कुछ अजीब-सी घटनाओं से वह परेशान होकर रोने लगी। कुछ देर बाद उसे लगा कि वह अपने आंसुओं से बनी नदी में भीग रही है। इसी नदी में एलिस की मुलाकात एक चूहे व अन्य जानवरों से हुई।

एलिस और अन्य जानवर तथा परिंदे पानी में भींग गए थे। सब ठंड से ठिठुर रहे थे। मूसजी ने इतिहास का एक पाठ पढ़ाना शुरू किया, ताकि सब सूख जाएं। पर ठंड दूर नहीं हुई। डोडो बत्तख ने प्रस्ताव रखा कि सब लोग परिषद् गुट्ट की दौड़ लगाएं। दौड़ के बाद सबको इनाम में टाफी बांटी गई। सबकी फरमाईश पर मूसजी ने एक किस्सा सुनाना शुरू किया। मूसजी बीच में रूठ गए। बातों–बातों में एलिस ने अपनी दीना पूसी का नाम ले दिया। पूसी का नाम सुनकर चिड़ियों में खलबली मच गई और एक–एक करके सब खिसक गए। एलिस ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की पर कोई न रूका। थोड़ी देर बाद एलिस को किसी के पैरों की आवाज सुनाई दी। उसने देखा वही सफेद खरगोश घबराया हुआ–सा आ रहा है।

खरगोश ने एलिस को मैरी-ऐन समझ लिया और काम करने के लिए आदेश देने लगा। एलिस खरगोश के घर में घुस गई। उसे वहां एक शीशी मिली जिस पर लिखा था 'मुझको पी लो।' एलिस ने जैसे ही उसे पिया, उसका कद बढ़ने लगा। उसने अपना बढ़ता हाथ खिड़की के बाहर निकाल दिया। हाथ देखकर खरगोश तथा अन्य जानवर डर गए। वे उसे घर से बाहर निकालने की कोशिश करने लगे। मौका देखकर एलिस घर से निकल गई। आगे उसकी मुलाकात एक कुत्ते, रेशम के कीड़े तथा कबूतर से हुई। अब आगे पढ़ो......

एलिस ने देखा कोई भागा चला आ रहा है। 'डाकिया है शायद' उसने सोचा। जब वह कुछ पास आया तो उसे बड़ा अचम्भा हुआ।

'ओइ रे! इत्ता बड़ा लिफाफा! इत्ता तो वह आप भी नहीं होगा!'

ज़रा और पास से देखने के लिए वह एक पेड़ की आड़ में खड़ी हो गई। वह कोई शाही हरकारा मालूम होता था। बड़ी ज़रक-बरक पोशाक थी।

मगर उसके मुंह को देखकर तो खामखा हंसी आती थी। बिलकुल मछली का-सा मुंह था। वैसा ही गलफड़,

और वैसी ही गोल-गोल चपटी आंखें। ऊपर से उसने पगड़ी कस रखी थी। एलिस मुश्किल से अपनी हंसी दबा सकी।

हरकारे ने दरवाजे पर ठक-ठक करके दस्तक दी।

उसके जवाब में एक दूसरा अर्दली अंदर से निकला। उसे देखकर भी एलिस को कम अचम्भा नहीं हुआ।

'कैसा मोटा-सा है मरा, मेंढक-जैसा!' उसने आप ही आप कहा। '.... हाय, मेंढक ही तो है। बड़ी-बड़ी गोल-गोल आंखें निकली आ रही हैं बाहर को—सर के ऊपर। मगर फेंटा कसे है यह भी। वाह रे अर्दली साहब!'

मेंढक अर्दली अपनी मोटी, सुस्त-सी आवाज में बोला, "सलाम भैया मच्छीराम, क्या है?"

मच्छीराम अर्दली- सलाम दादू, यह लो! बुलावा है महारानी साहिबा का, बेगम साहिबा के लिए। कड़ू की वाला खेल होई। मच्छीराम अर्दली की आवाज़ कुछ पतली-सी और तीखी थी।

दादू अर्दली- खेल, कड़ू की वाला? महारानी साहिबा का बुलावा? बेगम साहिबा के लिए? अच्छा, अच्छा! जाओ, दै देब; जाओ, दै देब!"

मच्छीराम- बंदगी!

दादू- बंदगी भैया!

उनकी बंदगी का ढंग देखकर एलिस हैरान रह गई। 'अरे, अरे, देखो तो!' उसके मुंह से निकला। 'कैसे पास आकर, झुककर, बंदगी कर रहे हैं! दोनों की नाक भी मिल गई एक-दूसरे से। हा, हा!'

एलिस ने अपनी हंसी रोकनी चाही, मगर वह रुकी नहीं। 'कैसे मज़े की बात है! हा, हा!भागूं यहां से, नहीं तो मुझे हंसता हुआ सुन लेंगे। हा, हा,!'

और हंसती हुई भागकर वह दूर के कुछ पेड़ों की आड़ में हो गई। वहीं से उसने देखा कि मच्छीराम जिस रास्ते आया था, उसी रास्ते उल्टे पांव वापस चला गया।

एलिस फिर लौट आई, उसने देखा कि दादू अभी तक दरवाज़े पर अकेला बैठा, आंखें फाड़े आसमान की तरफ एकटक देख रहा है, 'चलूं, बड़ा घोंघा-बसन्त लग रहा है! दरवाज़ा खुलवाऊं मैं भी,' उसने सोचा, और जाकर दरवाज़े पर ठक्-ठक् की।

मकान के अंदर से बर्तनों के फेंके जाने, बच्चे के रोने और किसी के उसे डांटने की आवाजें आ रही थीं। मगर दरवाज़ा बंद होने से कोई बात साफ-साफ समझ में नहीं आती थी।

दादू ने अपनी सुस्त मोटी आवाज में उसे टोका, "अइसे कुछ न बनी। कारन सुनो। पहला यह, कि तुम

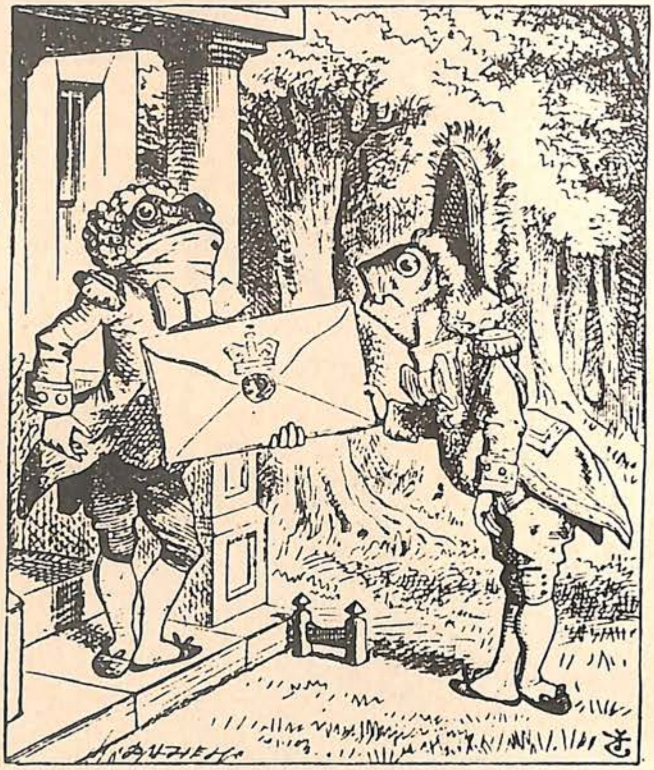

भी बाहेर, हम भी बाहेर। और दूसरा यह कि अंदर बड़ा गड़बड़झाला है। उहां तो कान पड़े आवाज़ न सुनाई दे!"

एलिस को भी लगा कि सचमुच अंदर बड़ा हंगामा मचा हुआ है।

दादू फिर धीरे-धीरे समझाने के ढंग से, इत्मीनान से बोला, "जब तुम दरवाज़ा खटखटाओ तब अस चाहो कि वह हमरे-तुमरे बीच में पड़े। जैसे कि, मान लो, हम बाहेर हैं और तुम अंदर; और दरवाज़ा बीच में रहे। तब तुम अंदर से खट्ट-खट्ट करो, तो हम बाहेर से खोल दें, जिसमें तुम निकल जाओ। बस! छुट्टी!"

एलिस ने अपने मन में सोचा, 'यह कैसे अजीब तरह बात करता है और करते वक्त भी आसमान की ही तरफ देखता रहता है आंख खोले मगर करे भी क्या बेचारा! परमात्मा ने आंखें तो सर के ऊपर बना दी हैं।'

दादू अपनी ही रो में बोले जा रहा था, "मैं तो बस, यहीं बैठा रहूंगा। कल तक, बस!"

चर्र की आवाज़ करके दरवाज़ा एकाएक खुला और साथ ही कोई बड़ी-सी प्लेट सर्राती हुई आई और खटाक् से बाहर किसी चीज़ से टकराई।

एलिस डर गई। 'हाय, यह क्या! यह तो प्लेट अंदर से आई! यह क्या हो रहा है? नाक उड़ गई होती दादू बेचारे की। वह तो अच्छा हुआ कि ...'

दादू अपनी ही गाए जा रहा था, जैसे कोई बात ही नहीं हुई, "कल नहीं तो परसों तक। बsss! यहीं बैठा

रहूंगा। बsssस!"

एलिस ने चिढ़कर उससे पूछा, "अरे, बताइए न, मैं अंदर जाऊं कैसे?"

"अरे, जाना होगा ही क्या?" 'होगा ही' पर ज़ोर देते हुए दादू ने उत्तर दिया।

'कैसा मूरख है!' एलिस ने मन ही मन कहा। 'इससे तो बात भी करना असम्भव है!'

दादू अपनी ही धुन में बड़बड़ाए जा रहा था, "मैं तो बैठा रहूंगा यहीं। बsssस! बहुत दिनों तक ... बहुत दिनों तक ... वहोsssत दिनों तक!"

एलिस ने फिर पूछा, "तो क्या करूं मैं, बताइए भी!"

दादू- जो जी में आए करो। हां, बस!

'मैं तो अब अंदर जाऊं! छोड़ूं इस बला को!' यह सोचकर एलिस ने साहस करके दरवाजे को हलका-सा धक्का दिया। मगर फिर ठिठकी, क्योंकि अंदर बड़ा शोर हो रहा था।

फिर भी वह हिम्मत करके अंदर चली गई।

अंदर सचमुच बड़ा हंगामा मचा हुआ था।

अंदर घुसते ही उसे एक छींक आई। कमरे में धुआं ही धुआं भरा था और मिर्चों की धसक भी आ रही थी।

उस धुएं में एलिस ने महसूस किया कि सामने शायद बेगम साहिबा बैठी हैं; बच्चे को खिला रही हैं। मगर कैसी चिढ़ी हुई हैं! और उधर बावर्चिन मालूम होती है, जो देगची में मिर्च झोंक रही है।

वटलोई में चमचा बड़े ज़ोरों से खटर-पटर कर रहा था। कुछ भूना जा रहा था। बीच-बीच में बावर्चिन बर्तन-कटोरी, थाली, प्लेट आदि- फेंकती जाती थी।

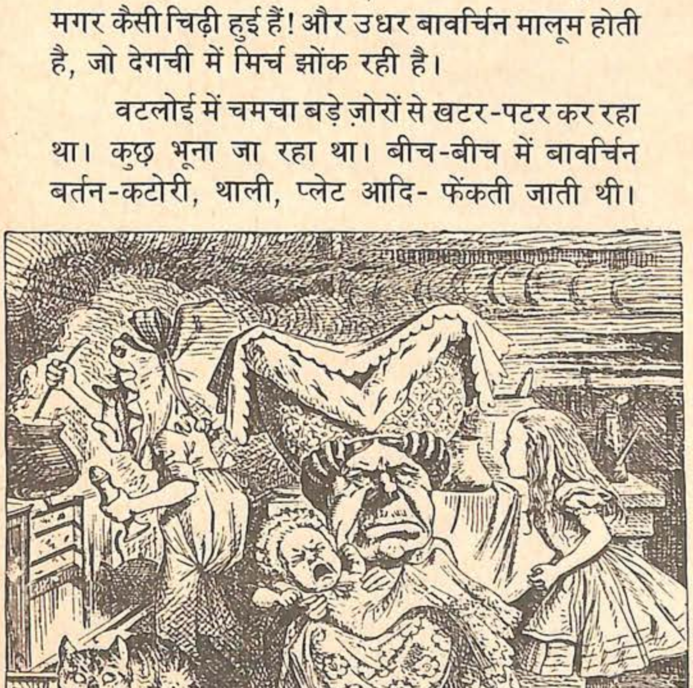

उसके गिरने से ज़ोर से झन्न की आवाज होती थी। साथ ही बावर्चिन चूल्हे को या बर्तनों को या मसालों को कोसती जाती थी।

बच्चा जोर-जोर से रो रहा था। बीच-बीच में बेचारा छींकता भी जाता था। उसकी मां उसे रहते-रहते डांट उठती, कभी-कभी थप्पड़ भी लगाती। और खुद भी छींकती जाती।

अजब मकान था!

एकाएक एलिस के कान में किसी बिल्ली के घुर्र-घुर्र करने की आवाज आई। उसने गौर से देखा तो एक बिलाव तंदूर के पास बैठा था। लगता था, जैसे आप ही आप हंस रहा हो, चौड़ा मुंह किए। एलिस को बड़ा अजीब लगा। कहीं बिल्लियां भी ऐसे हंसती होंगी! ज़रा मिलूं तो बेगम साहिबा से और पूछूं। नाराज़ होंगी तो हो लेंगी; देखा जाएगा।

तभी उसे जोर की एक छींक आई— आक्छीं! ज़रा-सा रुककर वह ऊंची आवाज़ में बोली, "आदाब बजा लाती हूं, बेगम साहिबा!" फिर गला साफ करके कहा, "ज़रा यह बताइएगा कि आपका यह बिलाव आप ही आप हंस क्यों रहा है, इस तरह दांत निकाले?"

बिलाव ने एक हलकी-सी 'म्याउं' की आवाज़ की और और भी जोर से घुर्र-घुर्र करने लगा।

बेगम साहिबा ने बच्चे की नाक साफ करते हुए कहा, "यह चेशायर का खास बिलाव है, इसीलिए।"

एकाएक उन्होंने डांटकर कहा, "चुप सुअर!" और फिर पहले की तरह बच्चे को लोरी देने लगीं। यानी एलिस की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

एलिस बेगम साहिबा के डांटने से एकाएक डर गई थी। पर तुरंत उसने सोचा कि 'सुअर' शायद बच्चे को कहा गया था, उसको नहीं।

उसने फिर खांसकर, बात जारी रखने के अंदाज में कहा, "म ... अ ... मगर आक्छीं!" उसे एकाएक छींक आ गई। "मैंने तो किसी बिल्ली को इस तरह मुस्कराते नहीं देखा!"

बेगम साहिबा— तुमने अभी देखा ही क्या है?

बच्चा रोने लगा था। उसे ज़ोर का एक थप्पड़ लगा। उसी समय दो-तीन बर्तन भी पास ही झन्न से आकर गिरे।

एलिस घबराकर चीख उठी, "हाय! ज़रा देख के बावर्चिन! ... आक्छीं! ... कुछ ख़याल तो करो! नाक उड़ गई होती बेचारे नन्हे बच्चे की! ... आक्छीं!"

बच्चा उसी तरह रोता रहा। बेगम के लेखे जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

बेगम ने बच्चे को धमकाकर और ज़ोर से नाक साफ करके एलिस से कहा, ''आपको सिर्फ अपने कामों की तरफ ध्यान देना चाहिए, दूसरों के कामों में टांग न अड़ानी चाहिए। अगर सब ऐसा करें तो इस दुनिया की रफ्तार ढीली न हो, बल्कि और तेज हो जाए।''

''मगर देखिए न, '' एलिस ने कहा, और तभी उसे जोर की एक छींक आई, 'आकछीं!' – ''अगर दुनिया की रफ्तार तेज हो जाए तो इससे तो बड़ी गड़बड़ी पैदा हो जाएगी। दिन और रात का हिसाब सब गलत हो जाएगा। क्योंकि देखिए, यह दुनिया चौबीस घंटे में एक बार अपनी कीली पर घूम जा ... आक्छीं! ...''

उधर बच्चा एकाएक फिर रो पड़ा और इधर बेगम साहिबा ने कड़ककर कहा, ''यह लड़की कीलों की बात करती है। फौरन ले जाओ इसको! और बस, उड़ा दो इसका सर!''

उसी क्षण झन्न से कुछ बर्तन आकर एलिस के पास गिरे।

एलिस डर गई। 'आंय-आंय-आंय! कहीं सचमुच ही तो मेरा सर ...?' फिर उसने मन में सोचकर देखा, 'नहीं, नहीं, यह तो यों ही कह रही होगी।'

''हां तो, '' उसने बेगम साहिबा से कहा, ''मेरे खयाल से तो वह चौबीस ही घंटे में एक बार घूमती है।'' फिर कुछ सोचकर बोली, ''या शायद ... बारह घंटे में। ...''

बेगम (चिढ़कर) – उंह, घूमती होगी। मेरा दिमाग मत चाटो। मुझे गणित से सख्त नफरत रही है।

बच्चे को एक ज़ोर की छींक आई; उसका पूरा बदन हिल गया और वह फिर रोने लगा।

बेगम अपना ध्यान एलिस की तरफ से हटाने के लिए जोर-जोर से लोरी गाने लगी। वह खूब झटके दे-देकर बच्चे को लोरी दे रही थी।

एलिस को यह लोरी बड़ी अजीब लगी। नींद की लोरी क्या, अच्छी-खासी डांट-डपट की लोरी थी। इससे तो सोता हुआ बच्चा भी डरकर रोने लगे। और इसी के साथ-साथ बर्तनों की खड़खड़, और उनका गिरना या फेंका जाना इस लोरी के साथ मानो बाजे का काम दे रहा था। छींकें सबको अलग आ रही थीं।

लोरी

''मुन्ने को डांटो—डपटो—डांटो।
मारो—कूटो, जब भी वो छींके''

(बच्चा छींकता है, 'आक्छीं!' तमाचा पड़ता है, 'पड़ाक्!')

''वह तो जान-जान के छींके
छींकने दो जितना भी छींके''
— पड़ाक्

(कोरस)

''भौं भौं भौं
भौं भौं भौं''

(बच्चा और बावर्चिन दोनों मिलकर कोरस की यह आवाज़ करते हैं।)

लोरी

छींके तो मैं दूं इक लप्पड़
ऐसा मारूं— ऐसा घुड़कूं,
— याद करे वो
सड़क्
अभी सुअर के जी में जो आवे
तो वो कहे, मैं तो मिर्चें ही सुड़कूं
— और मरे वो
सड़ाक्''

(कोरस)

(बच्चा, बावर्चिन और बेगम तीनों कुत्ते की आवाज़ में एकाएक भौंकते हैं—)

''भौं भौं भौं
भौं भौं भौं''

एलिस के मुंह से निकला, ''ऐसे तो मर जाएगा बेचारा! हाय-हाय!'

बेगम ने कहा, ''लो, फिर तुम्हीं लो! तुम्हीं खिलाओ इसे गोद में, सुअर को! मुझे तो अब मलका महारानी के यहां जाना है, कड़ूकी खेलने।'' फिर एकाएक तेज़ आवाज़ में ज़ोर से कहा, ''लो इसे!''

एलिस बोली, ''लाइए, इधर दीजिए। आप बेफिक्र हो जाएं!'' फिर आप ही आप कहने लगी, 'बेचारे को अधमरा तो कर दिया है। ऐसे में तो बेचारे की जान ही निकल जाएगी।'

बावर्चिन— बेकार की बातें!

उसने फिर कुछ बर्तन जोर से इधर-उधर फेंके। बेगम दरवाज़ा खोलकर बाहर चली गईं।

एलिस— अरे, क्या पागल हो गई है बावर्चिन, जो बेगम के बाहर निकलते न निकलते उनको गरम-गरम तवा खींचकर मारा। मैं तो बाज़ आई यहां से! बस, बाहर चलती हूं मैं भी। बाहर खुले में खिलाऊंगी इसे। ... मेरा मुन्ना!

एलिस बच्चे को थपकियां देते हुए, उसे गोद में लिए-लिए बाहर आई। "चुप हो जा! चुप हो जा! मुन्ना मेरा! भैया मेरा! छो जा!" ... 'हाय, यह तो सो भी गया।'

'कैसे ज़ोरों के खुर्राटे भर रहा है! कहीं नन्हे बच्चे भी ऐसे खुर्राटे भरते होंगे!' उसने सोचा। 'और नाक कैसी उठी हुई है इसकी, सुड़कू की!'

फिर उसे आप ही आप कुछ आश्चर्य-सा होने लगा, क्योंकि अब वह बड़ा गंदा-सा लग रहा था। वह बच्चे से बोली, "देख, अगर तू सुअर की-सी शक्ल बनाएगा, तो मैं गोदी में नहीं लूंगी तुझे, हां!"

वह आप ही आप सोचने लगी, 'कुछ गंदे बच्चे तो सचमुच ऐसे ही लगते हैं, जैसे वह मेरी क्लास में है ... मावेल और वह वॉव! छिः मैं तो कभी भी न होऊं ऐसी, चाहे मुझे कोई एक लाख पौंड भी क्यों न दे।'

बच्चे का खुर्राटा और बढ़ गया था। 'अरे, यह तो बड़े ज़ोरों के खुर्राटे,' "मुन्ना भैया!" कुछ-कुछ वैसी ही आवाज आ रही थी, जैसी सुअर करते हैं। एकाएक उसकी शकल की तरफ देखा, तो वह चौंकी।

"हाय, यह क्या मुन्ना भैया!" 'यह तो सचमुच सुअर का बच्चा हो गया। छिः, उतर भई, मैं नहीं रखती तुझे गोद में। जा, अपनी राह, जा! जभी मैं कहूं यह इतना भारी क्यों होता जा रहा है!"

उसने एकदम उसे नीचे उतार दिया।

'यह लो, वह तो निकल भी गया दूर!'

उस समय उसके दिल में यही बात आई कि कुछ गंदे-से बच्चों को तो, जो कहना नहीं मानते, सचमुच ही सुअर बना देना चाहिए। हां!

कहीं से बिल्ली की पतली, हलकी-सी 'म्याऊं' की आवाज़ आई।

चौंककर एलिस ने देखा, तो चेशायर पूस पेड़ पर बैठा था। बिलकुल उसी तरह यहां भी चौड़ा मुंह किए आप ही आप हंस रहा था।

'इसी से क्यों न रास्ता पूछूं,' एलिस ने सोचा।

"चेशायर पूस!" एलिस ने पुकारा।

जवाब में पूस ने हल्की-सी 'म्याऊं' की और घुर्र-घुर्र की आवाज़ भी।

"चेशायर पूस, मुझे ज़रा मेहरबानी करके बता दो, मैं यहां से अब किधर को जाऊं?"

चेशायर पूस– जिधर को भी जाना चाहो, जाओ।

एलिस– मेरा मतलब यह है कि जिसमें रास्ता मुझे कहीं न कहीं पहुंचा दे।

चेशायर पूस– अगर चलती जाओगी, चलती जाओगी, चलती जाओगी, तो रास्ता कहीं न कहीं ज़रूर पहुंचा देगा।

एलिस– उंह! ... अच्छा यह तो बताओ कि इधर आसपास रहते कैसे लोग हैं?

चेशायर पूस– इधर, मेरे दाहिने पंजे की तरफ को तो एक हैट बेचने वाला रहता है। और उधर ... मेरे बाएं पंजे की तरफ मार्ची खरगोश का घर है। दोनों ही एक-से पागल–सिड़ी! (1)

एलिस– लेकिन भाई, मैं पागलों के बीच में तो नहीं जाना चाहती।

चेशायर पूस– पर तुम करोगी क्या? यहां तो सभी पागल हैं– पागल और सिड़ी! सब के सब, तुम भी और मैं

---

1. हैट बेचने वाला और मार्ची खरगोश–इन दोनों पात्रों को पागल बताया गया है। यूरोप में हैट बनाने वाले सचमुच पागल हो जाते थे। हैट में जो फैल्ट कपड़ा लगता है उसको तैयार करने में पारे की आवश्यकता होती थी। पारे के ज़हरीले प्रभाव से हैट बनाने वालों के शरीर में एक कंपन शुरू हो जाता था और उनकी बोली भी गड़बड़ा जाती थी। हालत बिगड़ जाने पर इन पीड़ित लोगों के दिमाग पर भी प्रभाव पड़ता था। ऐसी स्थिति में हैट बनाने वाले लगभग पागल लगते थे।

मार्च के महीने में खरगोश का 'सहवास काल' होता है और वह पागलों की तरह उछलकूद करता फिरता है।

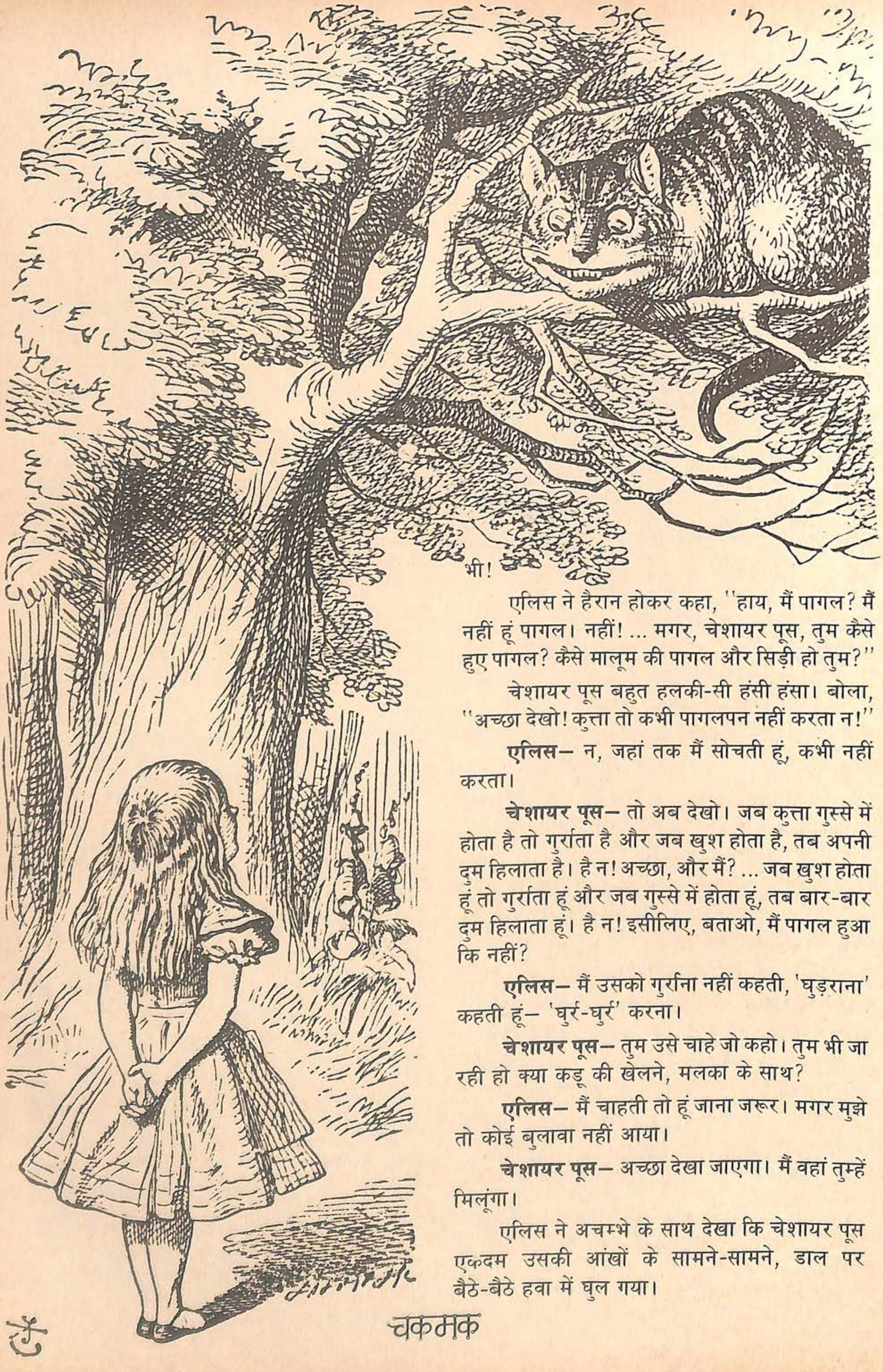

भी!

एलिस ने हैरान होकर कहा, "हाय, मैं पागल? मैं नहीं हूं पागल। नहीं! ... मगर, चेशायर पूस, तुम कैसे हुए पागल? कैसे मालूम की पागल और सिड़ी हो तुम?"

चेशायर पूस बहुत हलकी-सी हंसी हंसा। बोला, "अच्छा देखो! कुत्ता तो कभी पागलपन नहीं करता न!"

एलिस– न, जहां तक मैं सोचती हूं, कभी नहीं करता।

चेशायर पूस– तो अब देखो। जब कुत्ता गुस्से में होता है तो गुर्राता है और जब खुश होता है, तब अपनी दुम हिलाता है। है न! अच्छा, और मैं? ... जब खुश होता हूं तो गुर्राता हूं और जब गुस्से में होता हूं, तब बार-बार दुम हिलाता हूं। है न! इसीलिए, बताओ, मैं पागल हुआ कि नहीं?

एलिस– मैं उसको गुर्राना नहीं कहती, 'घुड़राना' कहती हूं– 'घुर्र-घुर्र' करना।

चेशायर पूस– तुम उसे चाहे जो कहो। तुम भी जा रही हो क्या कड़ू की खेलने, मलका के साथ?

एलिस– मैं चाहती तो हूं जाना जरूर। मगर मुझे तो कोई बुलावा नहीं आया।

चेशायर पूस– अच्छा देखा जाएगा। मैं वहां तुम्हें मिलूंगा।

एलिस ने अचम्भे के साथ देखा कि चेशायर पूस एकदम उसकी आंखों के सामने-सामने, डाल पर बैठे-बैठे हवा में घुल गया।

चेशायर पूस- हां, एक बात है।

चेशायर पूस फिर उसी डाल पर दिखाई दे रहा था।

एलिस (चौंककर)– ओह, क्या फिर आ गए? ... हां, क्या बात है?

चेशायर पूस– मैं यह तो पूछना भूल ही गया था कि उस बच्चे का क्या हुआ फिर?

एलिस– वह तो सुअर बन गया।

चेशायर पूस– हां, यही सोच रहा था मैं भी।

और यह कहते ही वह फिर घुल गया हवा में।

एलिस का खयाल था कि वह अब शायद फिर प्रकट नहीं होगा। फिर भी उसने सोचा कि देखूं-देखूं कुछ देर।

कुछ देर बाद उसे निश्चय हो गया कि अब नहीं आएगा ... तो ... उसने तय किया, 'तो मैं मार्ची खरगोश के ही यहां जाऊं।हैट बेचने वाले तो मैंने बहुत से देखे हैं। मार्ची खरगोश नहीं देखा। उसीसे भेंट करूं ज़रा! वह ऐसा कोई बहुत ही पागल थोड़ा होगा! क्योंकि मार्च का महीना भी तो नहीं है। तो बस ...'

"... हां ... वो ... क्या कहा था तुमने?– 'सुअर' कि 'गूलर'?" एकाएक एलिस ने फिर पूस की आवाज़ सुनी। वह फिर पेड़ पर उसी जगह नज़र आ रहा था।

एलिस– 'सुअर' कहा था। ... मगर पूस भाई, देखो एकदम गायब हो गए, फिर एकदम निकल आए; इससे मेरा सिर चकराने लगता है। ऐसा न करो मेरे साथ, मेहरबानी करके।

चेशायर पूस– अच्छा।

अबकी एलिस ने देखा कि सचमुच वह बहुत ही धीरे-धीरे गायब हो रहा है। पहले दुम और पीठ गायब हुई– पंजे भी हवा में मिट गए। फिर उसने देखा कि कान भी जा रहे हैं। बस, नाक और चौड़ी-सी फैली हुई मुस्कराहट रह गई ... बल्कि कहना चाहिए, सिर्फ दांत ही चमक रहे हैं। 'ऐसा भी किसी ने देखा होगा कि मुस्कराहट मौजूद और मुस्कराने वाला गायब!' एलिस ने सोचा।

एलिस ने सर को एक झटका दिया और निश्चय करके मार्ची खरगोश का घर ढूंढ़ने चल दी।

दूर से ही मकान को देखकर एलिस को पूरा विश्वास हो गया कि यहीं मार्ची खरगोश रहता है। क्योंकि उसकी चिमनियां बिलकुल खरगोश के कान जैसी थीं।

खुले आंगन में आकर उसे ऐसा लगा, जैसे वहां

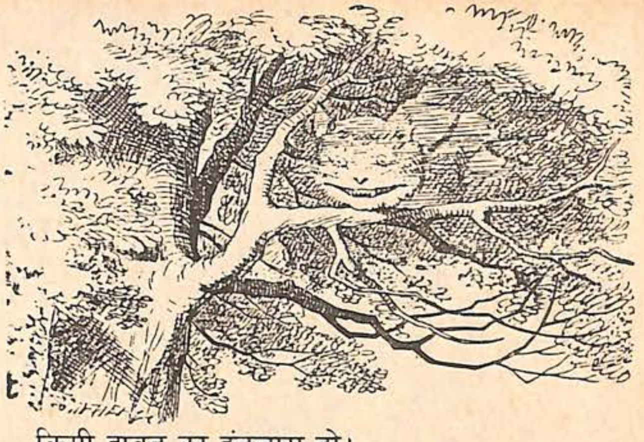

किसी दावत का इंतजाम हो।

बीच में एक मेज़ रखी थी और चारों तरफ बहुत-सी कुर्सियां, और प्लेट-प्याले। मगर वहां बैठे थे सिर्फ तीन ही जने– एक, हैट-टोपी बेचने वाला। उसके सर पर एक बड़ा ऊंचा-सा हैट था। उसी पर उसके दाम भी लिखे हुए थे। दूसरे, मोटे मूस। और तीसरे, मार्ची खरगोश खुद।

एलिस को दूर से देखते ही मोटा मूस और हैट-टोपी बेचने वाला दोनों चिल्लाए, "यहां और मेहमानों की जगह नहीं है। और मेहमानों की जगह नहीं है!"

एलिस– क्यों, सारी मेज़ तो खाली पड़ी हैं। बस तीन ही जने तो हैं आप लोग! और इतने सारे प्याले जो सब खाली हैं, ये किसके लिए हैं?

तीनों ने एक साथ हाथ हिलाकर कहा, "नहीं! नहीं! नहीं!"

मगर एलिस पर इनका कोई खास रोब नहीं पड़ा। वह उनके बराबर की एक सीट पर जाकर जम गई।

मार्ची खरगोश– अव्वल तो बिना निमंत्रण के मेरे घर आना, और फिर बिना कहे बैठ भी जाना!

हैट वाला– और फिर बाल तो देखो, कितने बढ़े हुए हैं! ठीक से कटिंग भी नहीं हुई। उनमें रिबन तक नहीं।

एलिस– सभ्यता इसे नहीं कहते हैं कि आप लोग किसी के जाती मामलों में दखल दें।

हैट वाला– बड़ी सभ्यता! ... अच्छा बताओ, लिखने का डेस्क और कौवा, दोनों एक-से क्यों हैं?

इस प्रश्न से एलिस मन ही मन बहुत खुश हुई। सोचा, 'चलो, अच्छा है, अब पहेली-बुझौवल होगी।'

मार्ची खरगोश– तुम समझती हो कि तुम बता ले जाओगी, क्यों दोनों एक-से होते हैं?

एलिस– जरूर। जो बूझ लूंगी तो ज़रूर बता दूंगी।

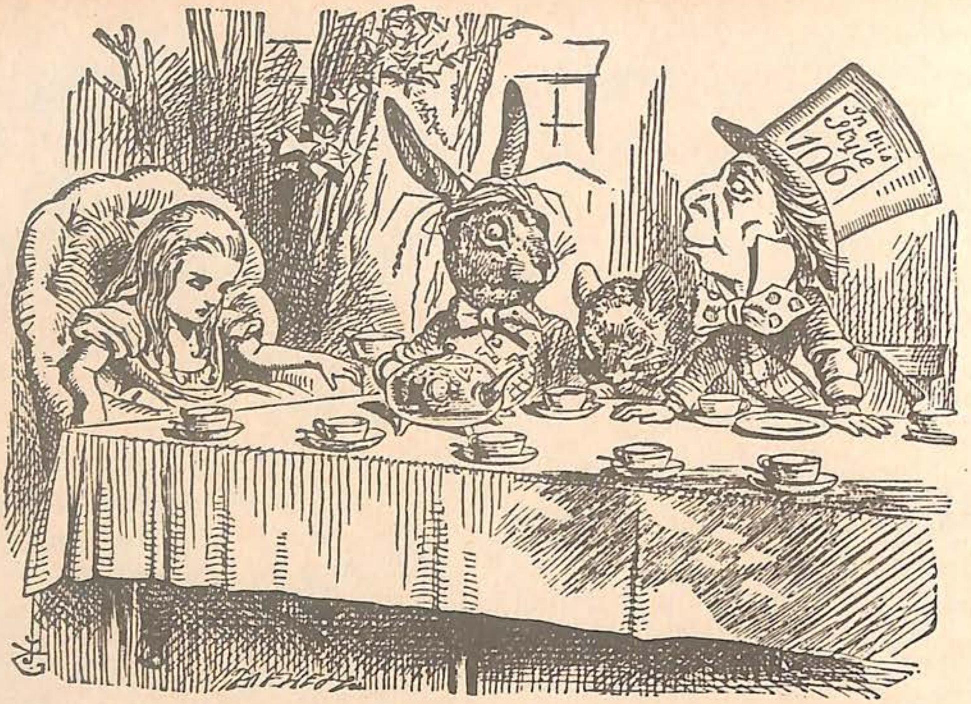

हैट वाला– जो बूझ लोगी, तो कैसे बता दोगी? क्या, बूझना और बताना एक ही बात है? फिर तुम कहोगी कि जो देख लूंगी, वह खा लूंगी; और जो खा लूंगी वह देख लूंगी ... क्या यह भी एक ही बात है?

मार्ची खरगोश– फिर तुम कहोगी, जो मुझे अच्छा लगेगा, मैं ले लूंगी; और जो मैं ले लूंगी, वह मुझे अच्छा लगेगा। क्या यह भी एक ही बात है?

मोटा चूहा नींद में झूल रहा था। मगर एकाएक वह भी बोल पड़ा। उसकी आवाज़ नींद से भारी थी "फिर तुम कहोगी कि मैं सोऊंगी तो सांस लूंगी; और सांस लूंगी तो सोऊंगी। क्या यह भी एक ही बात है?"

हैट वाले ने उसे ज़ोर से डांटा, "चुप रह! तेरे लिए तो यह एक ही बात है!"

एलिस पहेली का जवाब सोचती रही। वह मन ही मन दोहराती रही, 'लिखने का डेस्क और कौआ ... कौआ और ...'

एकाएक हैट वाले ने पूछा, "आज महीने की कौन सी तारीख है?"

और यह कहकर, जेब से घड़ी निकाली। उसे कान के पास ले गया, फिर गौर से देखा।

एलिस को बड़ा अजीब लगा। उसने कहा, "आप घड़ी में तारीख क्या देख रहे हैं, कान से लगाकर? ... तारीख तो, मेरा ख्याल है, चौथी ..."

हैट वाले ने कहा, "दो दिन गलत।" फिर कड़े स्वर में खरगोश से बोला, "मिस्टर मार्ची, तुम्हें याद है न, मैंने तुमसे कहा था कि मक्खन उस काम के लिए ठीक नहीं होगा?"

मार्ची खरगोश ने कुछ अफसोस के साथ मुंह लटकाकर जवाब दिया, "मगर मक्खन तो असली था!"

हैट वाले ने फिर भुनभुनाकर कहा, "मगर कुछ रोटी के छिलके भी तो उसमें पड़ गए होंगे? तुम्हें रोटी काटने वाले चाकू से वह मक्खन नहीं भरना था!"

एलिस को खरगोश के ऊपर बड़ा तरस आया। 'बेचारा मार्ची! कैसा उदास मुंह किए अपनी घड़ी को देख रहा है!'

एकाएक उसने आश्चर्य से देखा कि वह घड़ी को चाय में डुबा रहा है, और फिर उसे निकालकर गौर से देख रहा है।

उसी अफसोस के साथ मुंह लटकाए हुए मार्ची खरगोश फिर बोला, "मगर मक्खन तो बिलकुल असली था। तुम तो जानते हो।"

एलिस– कैसी अनोखी घड़ी है! महीने का दिन बताती है, समय नहीं बताती!

उसे हलकी-सी हंसी भी आ गई।

हैट वाला– क्यों बताए समय? क्या तुम्हारी घड़ी बताती है कि अब कौन साल है?

एलिस– साल क्यों बताए? साल तो आप ही बहुत दिनों तक चलता है।

हैट वाला– यही तो मेरी घड़ी के साथ है।

एलिस– माफ कीजिए, मैं आपकी बात समझी

नहीं।

हैट वाले ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। वह मुड़कर खरगोश से बोला, "मोटू फिर सो गया। उसकी नाक पर चाय डालो।"

मार्ची खरगोश ने थोड़ी-सी चाय मोटे चूहे की नाक पर उड़ेल दी।

एलिस— हाय, बेचारे की नाक जली।

मोटा चूहा (सोते से चौंककर नाक हिलाते हुए)— ठीक! ठीक! ठीक! यही तो मैं कहा रहा था।

हैट वाले ने एकाएक एलिस से पूछा, "तुमने पहेली बूझ ली?"

एलिस— नहीं। मैं तो सोच-सोच के हार गई। मुझे समझ ही नहीं आई। आप बताइए, क्या है इसका जवाब?

हैट वाला— मुझे खुद नहीं मालूम।

मार्ची खरगोश— और न मुझे।

एलिस— आह, कितना समय बेकार गया! इसको ऐसी पहेलियों में बरबाद नहीं करना चाहिए जिनका कोई जवाब ही न हो।

हैट वाला— अगर तुम समय को कुछ भी जानती होतीं, तो 'इसको' न कहतीं, 'इनको' कहतीं।

एलिस— आपकी बात मेरी समझ में नहीं आई।

हैट वाला (कुछ शान से)— ये बातें तुम्हारी समझ में नहीं आ सकतीं। मैं दावे से कहता हूं कि तुम्हारी समय के साथ आज तक कोई बात नहीं हुई।

एलिस ने कहा, "हां, शायद नहीं। लेकिन ..." वह कुछ संकोच से बोली, "लेकिन जब मैं संगीत सीखती हूं तब ठीक समय पर थाप देती जाती हूं ... इस तरह।" उसने हाथ से ताल देकर बताया।

हैट वाले ने बड़े अक्लमन्द की तरह सिर हिलाकर कहा, "हां, इसीलिए तो! वह थाप पसंद नहीं करता। अगर तुम उससे ठीक-ठीक बरताव करो, तो वह तुम्हारी घड़ी में जो चाहोगी बजा देगा। अब जैसे, मान लो, कि सुबह के साढ़े दस बजे हैं, और सबक पढ़ने का घंटा हो गया तो तुम चुपके से समय के कान में इशारे से कह दो! बस। फिर देखो, सुई एकदम घूमकर डेढ़ पर आ जाएगी। दोपहर के खाने का टाइम हो जाएगा।"

मार्ची खरगोश (बहुत धीरे से)— काश, कि मेरे लिए ऐसा हो जाता!

एलिस खुशी से बोली, "हां, रे! तब तो कितना अच्छा होता! सचमुच!" फिर वह कुछ सोचने लगी और बोली, "पर देखो न, तब मुझे भूख थोड़े ही लगती!"

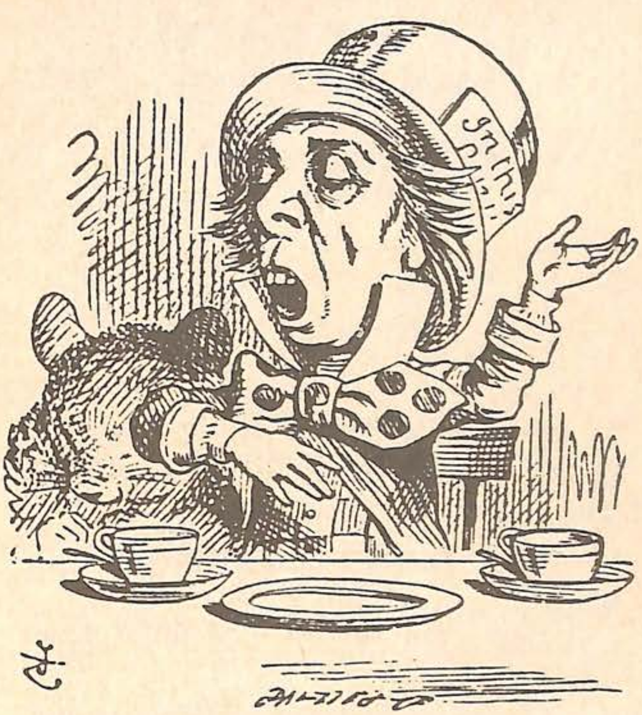

हैट वाला— हां, हां, शुरू-शुरू में तो नहीं लगती, मगर तुम फिर जब तक चाहतीं, डेढ़ बजाए रखतीं।

एलिस— क्या आप ऐसा ही करते हैं?

हैट वाले का स्वर एकदम बहुत गंभीर और उदास हो गया। बोला, "नहीं भाई, मैं तो ऐसा नहीं करता।" फिर उसने एलिस को समझाने के ढंग से बताया, "बात यह है कि पिछले मार्च के महीने में मेरी उससे कुट्टी हो गई। कुट्टी! यह तभी की बात है, जब ये मार्ची खरगोश पगला गए थे।" उसने चाय का चम्मच मार्ची की नाक में लगाकर बताया।

एलिस (प्रार्थना के स्वर में)— देखिए, चम्मच उनकी नाक में लगाकर मत बताइए!

हैट वाला— बड़ा भारी नाच-गाने का दिन था उस रोज! और पान की मलिका-महारानी ने बड़ी ठाट-बाट की दावत की थी। और मुझे एक गीत गाना पड़ा था। उनके दरबार में। ...

हैट वाला वही गीत गुनगुनाने लगा, जो उसने वहां गाया था—

"टिमटिम टिमटिम, टिमटिम टिमटिम
चमको, चमको, नन्हे-नन्हे, चमगादड़
देख चकित हूं, देख चकित हूं—
जाने क्या तुम, जाने क्या तुम
करते रहते उड़-उड़कर

"शायद तुमने सुना होगा यह गीत?" उसने कहा।

एलिस— हां, ऐसा ही कुछ-कुछ है।

हैट वाले ने कहा, "आगे इसमें आता है ... मालूम है न? —

दूर, बहुत ही दूर, बहुत ही दूर
बहुत दुनिया के ऊपर
उड़ते रहते, उड़ते रहे
जैसे चा की ट्रे उड़ती है
टिमटिम, टिमटिम,
टिमटिम, टिमटिम

मोटा चूहा नींद-भरी अपनी भारी आवाज़ में धीरे-धीरे दोहराने लगा— "ठिमठिम, ठिमठिम, ठिमठिम, ठिमठिम, ठिमठिम ..."

"चुप!" हैट वाले ने ज़ोर से चिकोटी काटकर उसे डांटा।

"चुप!" मार्ची खरगोश ने भी धीरे से डांटकर कहा।

एलिस— उसके चिकोटी मत काटिए, बेचारे के!

हैट वाला— हां, तो मैंने अभी गीत खत्म भी नहीं किया था कि मलिका चिल्लाई, 'यह समय का खून कर रहा है। उड़ा दो इसकी गर्दन!'

एलिस— हाय, कैसी ज़ालिम है मलिका!

हैट वाला बड़ा उदास मुंह बनाकर बोला, "बस भाई, वह दिन है और यह दिन, तब से समय मेरा रत्ती-भर भी कोई काम नहीं करता। तब से हमेशा छः ही बजे रहते हैं!"

एलिस को यह बड़ी नई बात मालूम हुई। "अच्छा?" उसने कहा। "तभी चाय के इतने सारे प्याले यहां रखे हुए हैं!"

हैट वाला— (आह भरकर) हां, यही तो बात है। बराबर चाय का टाइम रहता है। यहां तक कि हमें बीच में प्लेट-प्याले धोने का भी वक्त नहीं मिलता।

एलिस— अच्छा! इसीलिए आप लोग अपनी सीट छोड़कर एक-एक सीट आगे बढ़ते जाते हैं? फिर उसके बाद क्या करते हैं?

मार्ची खरगोश— (ऊबकर)— ऊंह, हटाओ। अब कोई और बात करो। मेरी राय में अब इस लड़की को चाहिए, कोई कहानी सुनाए।

एलिस— मुझे तो कोई कहानी कहनी नहीं आती। सच कह रहीं हूं।

हैट वाला— तब फिर मोटा चूहा सुनाएगा कहानी। उठ मोटू, उठ! उठ! हैट वाले ने बड़ी बेदर्दी से उसके चिकोटी काटी।

मोटा चूहा एक लंबी 'स्स्सी!' करके बोला, "मैं सो थोड़े ही रहा था! मैं तो आप लोगों की सब बातें सुन रहा था!"

मार्ची खरगोश— तो बस, चलो, अब कहानी सुनाओ!

एलिस ने भी प्रार्थना के स्वर में कहा, "हां मोटे चूहे साहब, सुनाइए कोई अच्छी-सी कहानी!"

मोटे चूहे ने बहुत जल्दी-जल्दी कहना शुरू किया, "बहुत पुरानी बात है; जब तीन सगी बहनें रहती थीं। उनके नाम थे— एल्सी, लेसी, टिल्ली। वे एक कुएं के अंदर, बिलकुल उसके अंदर, रहती थीं।"

एलिस— लेकिन वहां वे खाती क्या थीं?

मोटा चूहा (कुछ सोचकर)— वे ... वे ... वे शीरा खाती थीं।

एलिस— नहीं! शीरा नहीं खाती थीं। शीरा खाकर बीमार न पड़ जातीं?

मोटा चूहा— तो बीमार तो वे पड़ ही गईं थीं। बहुत ही बीमार! बहुत ही बीमार!

एलिस— ओह हो, तब फिर वे उस कुएं में क्यों रहती थीं?

मार्ची खरगोश— एलिस बीबी, थोड़ी सी चाय और ले लीजिए!

एलिस ने कुछ नाराजगी और रुखाई से जवाब दिया, "थोड़ी सी क्या ... मैंने तो ज़रा सी भी चाय नहीं ली अब तक!"

हैट वाला— तुम्हारा मतलब यह है कि तुम और कम ले नहीं सकतीं? न कुछ लेने के बाद, और कुछ लेना तो बहुत आसान है।

एलिस बोली, "बस रहने दीजिए। कोई आपकी राय नहीं मांग रहा है।" फिर कुछ तकल्लुफ-सा करते हुए उसने कहा, "अच्छा दीजिए, लिए लेती हूं चाय-टोस्ट। ... मगर मोटे मूस जी, यह तो बताइए कि वे तीनों बहनें कुएं के अंदर, बिलकुल उसके अंदर, तह में क्यों रहती थीं?"

मोटा चूहा धीरे-धीरे सोचता हुआ बोला, "अ ... अ ... अ ... अ ..." फिर एकाएक "वह शीरे का कुआं था न!"

एलिस चिढ़कर बोली, "कहीं शीरे का भी कुआं होता होगा!"

"हिश्श्श्श!" हैट वाला और खरगोश एक साथ बोले।

मोटा चूहा कुछ बुरा मान गया था। उसने दबी आवाज़ में गंभीरता से कहा, "अगर आप तहज़ीब के साथ चुपचाप कहानी सुनसकतीं हैं तो सुनिए। नहीं तो फिर आप ही इस कहानी को पूरा कर लीजिए! हां, नहीं तो!"

एलिस– नहीं, नहीं; आप कहिए। मैं अब नहीं रोकूंगी। कौन जाने, हो सकता है, ऐसा कोई एक कुआं हो कहीं!

मोटे चूहे ने और भी बुरा मानकर उसकी नकल उतारते हुए कहा, "एऽज कुआं! हुं हुं। ... अच्छा तो खैर।" अब फिर वह जल्दी-जल्दी कहानी सुनाने लगा, "ये तीनों लड़कियां, छोटी-छोटी लड़कियां कुछ-कुछ खींचना सीखती थीं। कुछ खींचना।"

एलिस– क्या खींचना?

हैट वाला– मुझे एक प्याला चाहिए। हम लोग जरा एक-एक सीट आगे-आगे बढ़ चलें।

सब एक-एक सीट और आगे बढ़कर नए प्लेट प्यालों के सामने जम गए।

एकाएक दूधदानी औंधी हो गई। इस पर एलिस बोल उठी, "हांऽ! देखिए, मार्ची साहब, आपका पंजा लगने से सारी दूध-दानी औंधी हो गई है।" फिर कुछ याद करके बोली, "मैं यहां पर टोक नहीं रही हूं। मगर, देखिए, बस एक बात मेरी समझ में नहीं आयी, वह बता दीजिए कि वे शीरा कहां से खींचती थीं?"

हैट वाला बोला, "तुम कुएं से पानी खींच सकती हो कि नहीं? बस, वैसे ही समझ लो। लोग शीरे के कुएं से शीरा भी खींच सकते हैं। शिह! इतनी-सी बात भी समझ में नहीं आई।" फिर बहुत धीरे से कहा, "बुद्धू!"

लेकिन एलिस ने फिर जोर देकर कहा, "लेकिन वे तो कुएं के अंदर थीं, बिलकुल उसकी तह में!"

जवाब में मोटे चूहे ने भी उसी तरह जोर देकर कहा, "और क्या! बिलकुल अंदर तह में!"

एलिस ने उदास होकर, मजबूरन हार मान ली और धीरे से कहा, "खैर अच्छा!"

मोटे चूहे ने एक गहरी सांस खींचकर कहा, "हां तो, वे खींचना सीख रही थीं। तरह-तरह के चित्र और मूर्तियां ... तरह-तरह की चीज़ें ... वे सारी चीजें, जिनका नाम 'च' से शुरू होता है।"

एलिस– क्यों, 'च' से ही क्यों?

मार्ची खरगोश– क्यों, 'च' से ही क्यों नहीं?

"अच्छा, खैर," कहकर एलिस चुप हो रही।

इस बीच मोटे चूहे की आंख झपक गई थी और वह

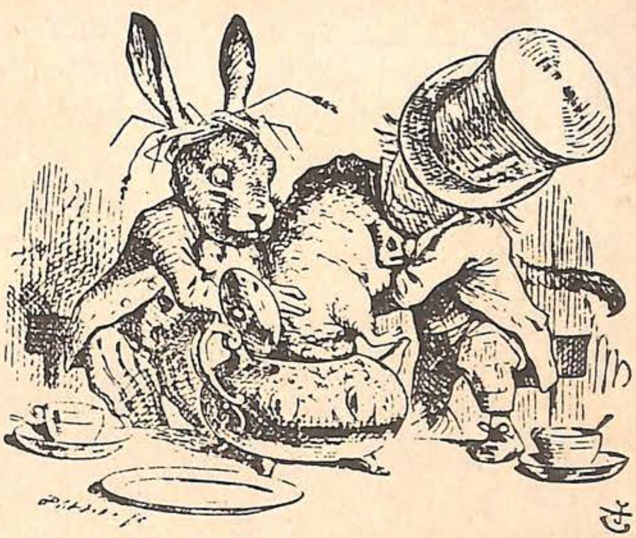

मजे में हलके-हलके खर्राटे लेने लगा था।

हैट वाला बोला, "अबे, उठ! फिर सो गया, मोटू! उठ! और उसके एक बहुत ज़ोर की चिकोटी काटी।

मोटे चूहे ने ज़ोर से 'स्स्सी!' की, और बोला, "उफ! ... हां, 'च' से शुरू होता है। जैसे, 'चूहेदानी', 'चांद', 'चम्मच', 'चिकनापन' ... कहते हैं न, 'चिकनाई का चिकनापन'! तुमने किसी को चिकनापन खींचते हुए देखा है कभी?"

एलिस– देखो तो इसे! मुझसे पूछ रहा है। जैसे सचमुच मुझे पता हो। मैं तो नहीं समझती कि कोई ...।

हैट वाला– नहीं समझती तो बोलो मत बीच में।

मोटा चूहा फिर खर्राटे लेने लगा था।

एलिस अब सचमुच खीझ से भर उठी। गुस्से से प्याले वगैरह एक तरफ सरकाकर उठ गई। बोली, "यह क्या वाहियात बात है! जाने क्या समझ लिया है मुझे! बाज़ आई मैं! लो,यहां से जाती हूं मैं! हां, नहीं तो!"

और वह वहां से धीरे-धीरे चल दी। मगर उसके मन में था कि वे उसे बुला लें, उससे कहें कि 'आ जाओ एलिस बीबी, गुस्सा मत होओ!' मगर वहां किसी का भी ध्यान उसकी ओर न था। अलबत्ता उसने चौंककर देखा कि वे मोटे चूहे का सर चाय के बरतन में औंधा कर रहे हैं। बेचारा! ... अब इसके बाद तो उसे नींद नहीं आनी चाहिए!

एलिस ने रूठे हुए स्वर में ज़रा ज़ोर से कहा, "मैं तो कभी न जाऊं ऐसी दावत में! ऐसी तो चाय-पार्टी मैंने सारी उम्र नहीं देखी!"

(अगले अंक में जारी)

लेखक : लुइस कैरल प्रस्तुतकर्त्ता : शमशेर बहादुर सिंह

प्रतियोगिता

इस अंक के आवरण सहित सभी रंगीन चित्रों को नीचे दिए क्रम में देखो: चित्रों को देखकर, तुम्हें क्या लगा? इन चित्रों से जो बात उभरती है या जो तुम महसूस करते हो, उसे एक छोटी कहानी या कविता के रुप में लिख डालो। तुम चाहो तो अपनी कहानी को चित्र कहानी के रूप में भी लिख सकते हो (उदाहरण के लिए इसी अंक के पृष्ठ 3 से 11 देखो)।

1

2

3

4

5

6

7

8

तुमने जो भी लिखा चकमक को भेज दो। अच्छी रचनाएं प्रकाशित की जाएंगी।

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/87

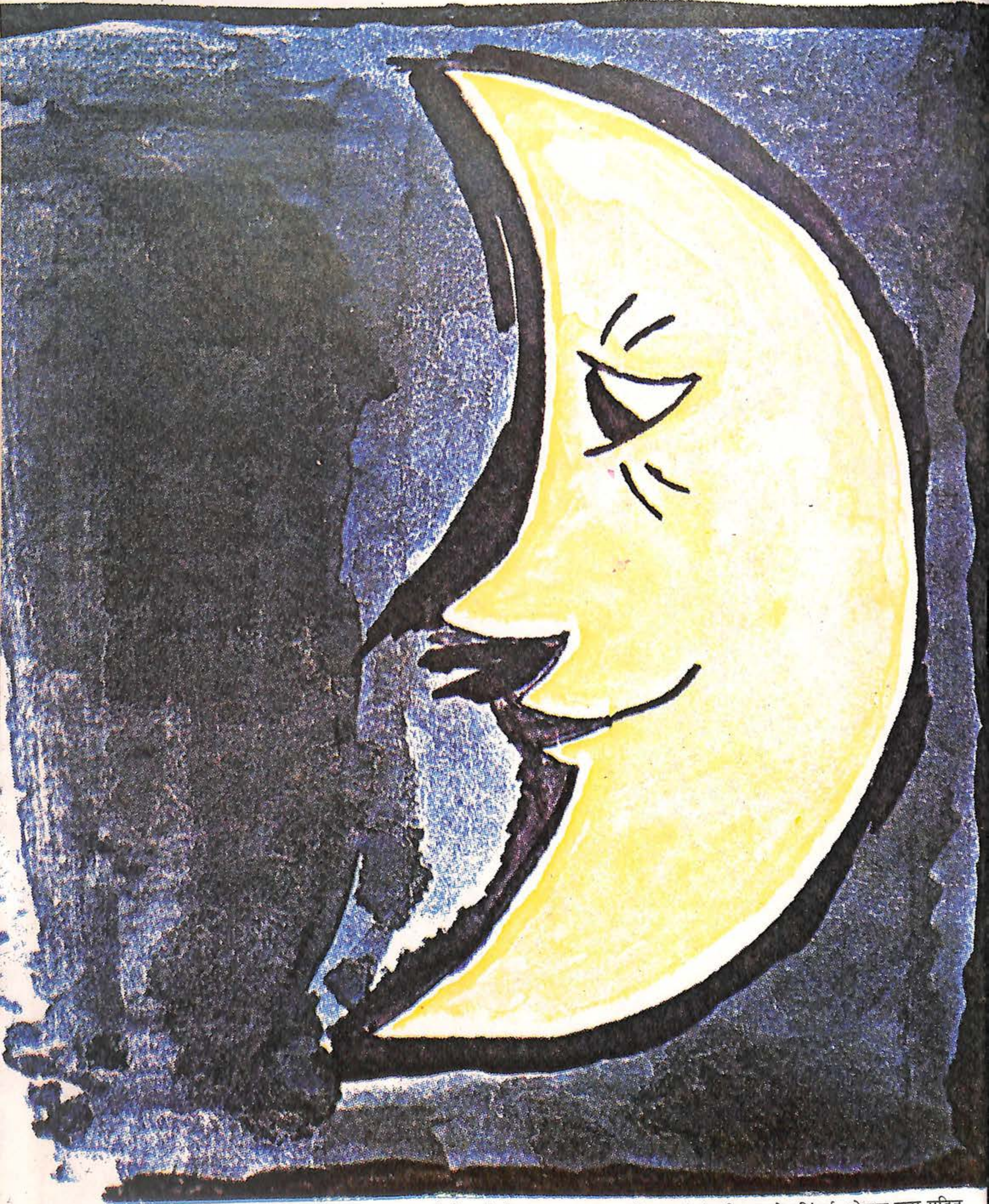

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित
कागज 'यूनिसेफ' के सौजन्य से